

वैश्विक बैंकिंग गतिविधियां

सितंबर 2009 में वैश्विक वित्तीय संकट की घटना का एक वर्ष पूरा हो गया। सितंबर 2008 में अमरीका के बड़े निवेश बैंकों में से एक अर्थात् लीमन ब्रदर्स की विफलता की घटना के बाद आर्थिक, वित्तीय तथा मनोवैज्ञानिक संकट के दौर का जो सिलसिला-सा चल पड़ा उसने शीघ्र ही पूरे विश्व को अपने चपेट में ले लिया। वैश्विक वित्तीय संकट से बुरी तरह प्रभावित होने के कारण 2008-09 एक ऐसा वर्ष बन गया है जिसने वैश्विक बैंकिंग उद्योग के भावी विकास को प्रमुख चर्चा का विषय बना दिया है। वित्तीय प्रणाली की बहाली प्रमुख प्राथमिकता होने के कारण वैश्विक स्तर पर बचाव के उपाय किए गए। इन सभी उपायों ने, विशेष रूप से प्रमुख बैंकों की चूक संबंधी जोखिम को कम किया और “सबसे खराब स्थिति” से बचने में मदद की। उतार-चढ़ाव के दौर के बाद अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजार 2009 की दूसरी तिमाही में सामान्य स्थिति की ओर आगे बढ़ रही है। तथापि, अटलांटिक के दोनों ओर के देशों में वैश्विक बैंकिंग क्षेत्र का परिदृश्य जटिल बना हुआ है। केंद्रीय बैंकों तथा सरकारों द्वारा की गई सक्रिय तथा शीघ्रता से की गई कार्रवाई एवं विनियामक एवं पर्यवेक्षी नीति संबंधी उपायों के कारण संकट का प्रतिकूल प्रभाव नियंत्रणाधीन रहा। 2010 के दौरान वैश्विक अर्थव्यवस्था की बहाली हो जाने की संभावना है जो वैश्विक बैंकिंग प्रणाली में सुधार हेतु मार्ग प्रशस्त करेगा।

1. भूमिका

2.1 2009 की पहली तिमाही तक दबाव में रहे वैश्विक वित्तीय बाजार में उसके कतिपय खंडों के कार्यकलापों में वृद्धि होने के कारण दूसरी तिमाही में उतार-चढ़ाव एवं जोखिम स्प्रेड में कमी देखी गयी। वास्तविक क्षेत्र के कार्यकलापों में गिरावट की दर में कमी आने, वित्तीय क्षेत्र के लिए बचाव योजनाओं तथा कुछ प्रमुख बैंकों की हानियों की मात्रा की बेहतर स्पष्टता के कारण जोखिम उठाने के प्रति रुचि में वृद्धि हुई जिसके कारण उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में स्टॉक की कीमतों में उल्लेखनीय वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई। विभिन्न देशों के केंद्रीय बैंकों ने 2009 की पहली तिमाही में नरम मौद्रिक नीति का रुख बनाए रखा जो 2009 की दूसरी तिमाही तक जारी रहा। विकसित अर्थव्यवस्थाओं द्वारा किए गए बेहतर रूप से समन्वित एवं संयोजित मौद्रिक उपायों ने परिणाम दिखाना शुरू कर दिया है। वैश्विक ऋण स्प्रेड में कमी आना शुरू हो गया है। ऐसे संकेत मिले हैं कि जहां कई देशों की ऋणात्मक वृद्धि दर में कमी आना शुरू हो गया है वहीं निजी क्षेत्रों को प्रदान किए गए ऋण की मात्रा में वृद्धि होना भी शुरू हो गया है। वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट, अक्टूबर 2009 के अनुसार वैश्विक वित्तीय प्रणाली के तात्कालिक परिदृश्य में अप्रैल 2009 के परिदृश्य से उल्लेखनीय रूप से सुधार हुआ है।

2.2 इस परिदृश्य में, छह खंडों में विभाजित इस अध्याय के खंड 2 में वैश्विक समष्टि आर्थिक परिदृश्य का विहगावलोकन प्रस्तुत

किया गया है। खंड 3 में वैश्विक बैंकिंग प्रवृत्ति का विश्लेषण किया गया है। खंड 4 में वैश्विक बैंकिंग प्रवृत्ति के परिदृश्य पर चर्चा की गयी है। खंड 5 में वैश्विक संदर्भ में भारतीय बैंकिंग प्रणाली का संक्षिप्त विवरण दिया गया है जिसके बाद खंड 6 में निष्कर्ष दिया गया है।

2. वैश्विक समष्टि आर्थिक परिदृश्य

2.3 2008 के मध्य से वैश्विक परिदृश्य में गिरावट की जो प्रवृत्ति देखी गयी वह 2009 की दूसरी तिमाही तक जारी रही, हालांकि इस बीच स्थिरता के अस्थायी संकेत उभरने लगे हैं। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के अक्टूबर 2009 के वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में 2009 में वैश्विक अर्थव्यवस्था में 1.1 प्रतिशत का संकुचन होने का अनुमान लगाया गया है जो अप्रैल 2009 के पूर्वानुमान के 1.3 प्रतिशत तथा जुलाई 2009 के अद्यतन के 1.4 प्रतिशत से थोड़ा कम है। तथापि, 2010 में वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में सुधार होकर 3.1 प्रतिशत की वृद्धि होने का अनुमान है (सारणी II.1)।

2.4 अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) के अक्टूबर 2009 में जारी वैश्विक आर्थिक परिदृश्य (डब्ल्यूईओ) में 2009 में अमरीका के वास्तविक सकल देशी उत्पाद में 2.7 प्रतिशत का संकुचन होने का अनुमान लगाया गया है जिससे डब्ल्यूईओ के जुलाई 2009 अद्यतन

सारणी II.1 : वैश्विक सकल देशी उत्पाद में वृद्धि

(प्रतिशत)

देश / क्षेत्र	2009	2010
1	2	3
अमरीका	(-) 2.7	1.5
ब्रिटेन	(-) 4.4	0.9
यूरो क्षेत्र	(-) 4.2	0.3
जापान	(-) 5.4	1.7
चीन	8.5	9.0
भारत	5.4	6.4
उन्नत देश	(-)3.4	1.3
उभरते और विकासशील देश	1.7	5.1
विश्व	(-)1.1	3.1

स्रोत: अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष वैश्विक आर्थिक परिदृश्य, अक्टूबर 2009।

के 2.6 प्रतिशत के मुकाबले थोड़ी खराब स्थिति प्रदर्शित होती है। जून 2009 में बरोजगारी की दर बढ़कर 9.3 प्रतिशत हो जाने से, जो कि पिछले 3 दशकों में सर्वाधिक है, 2009 की दूसरी तिमाही में प्रमुख समष्टि आर्थिक संकेतक प्रतिकूल बने रहे। तथापि, अभूतपूर्व मौद्रिक, वित्तीय तथा राजकोषीय नीति संबंधी हस्तक्षेप उपभोक्ताओं के खर्चों तथा आवास एवं वित्तीय बाजारों को सुस्थिर करने में सहायता कर रहे हैं और यह 2009 की दूसरी छमाही में वृद्धि दर में फिर से मामूली सुधार आने की ओर इंगित करता है। अप्रैल-जून 2009 के अमरीका के उत्पादन संबंधी आंकड़े दर्शाते हैं कि उसके वास्तविक जीडीपी में गिरावट की प्रवृत्ति में 2009 की पहली तिमाही के छह प्रतिशत की कमी की तुलना में एक प्रतिशत की कमी आएगी। यूरो क्षेत्र का परिदृश्य अमरीका से भी खराब है। यूरो क्षेत्र में 2009 में 4.2 प्रतिशत का संकुचन तथा 2010 में 0.3 प्रतिशत की वृद्धि होने का अनुमान है - जो कि डब्ल्यूईओ द्वारा जुलाई में दोनों वर्षों के लिए किए गए पूर्वानुमानों से 0.6 प्रतिशत का सुधार दर्शाता है। यूरो क्षेत्र में वृद्धि की संभावना में हुए सुधार का प्रमुख कारण फ्रान्स तथा जर्मनी में सकारात्मक वृद्धि होना है। 2009 की दूसरी तिमाही में औद्योगिक उत्पादन, खपत तथा निर्यात संबंधी आंकड़ों में सुधार हुआ। तथापि, निजी क्षेत्र में ऋण वृद्धि की दर में कमी आने तथा जनवरी - जून 2009 के दौरान बेरोजगारी की दर में वृद्धि होने के कारण यूरो क्षेत्र की आर्थिक बहाली कमतर रहने का अनुमान है। सितंबर 2008 में लीमन ब्रदर्स के दिवालिया हो जाने के बाद टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं की मांग में आई कमी के कारण घरेलू मांग के कम होने, श्रमिक बाजारों की स्थितियां बिगड़ने, आर्थिक स्थिति तनावपूर्ण रहने तथा अप्रयुक्त क्षमता में वृद्धि होने के कारण जापान

के सकल घरेलू उत्पाद में दो तिमाहियों में वार्षिकीकृत आधार पर 10 प्रतिशत की कमी आई। तथापि, बाद के आंकड़े दर्शाते हैं कि उत्पादन के स्तर में स्थिरता आ रही है और उपभोक्ताओं के विश्वास के स्तर में सुधार हो रहा है। जापान की अर्थव्यवस्था में 2009 में 5.4 प्रतिशत की कमी आने तथा 2010 में 1.7 प्रतिशत की वृद्धि होने का अनुमान है।

2.5 आइएमएफ ने पूर्वानुमान लगाया है कि 2009 में उभरती तथा विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की वृद्धि दर 2008 के 6.0 प्रतिशत से घटकर 1.7 प्रतिशत हो जाएगी तथा 2010 में बढ़कर 5.1 प्रतिशत हो जाएगी। तथापि, आइएमएफ ने विकासशील एशिया के लिए चीन, भारत तथा एशियान-5 देशों की बेहतर संभावनाओं का उल्लेख करते हुए विकासशील एशिया के वृद्धि परिदृश्य में बेहतर दिखाई है। 2009 में अब तक (जुलाई 2009 तक) एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के व्यापक क्षेत्रों में औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हुई है। सबसे उल्लेखनीय बात चीन के औद्योगिक उत्पादन में बहाली थी जो सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा स्थिर पूंजी निवेश में भारी बढ़ोतरी तथा सुदृढ़ ऋण वृद्धि के कारण थी। चीन घरेलू मांग, विशेष रूप से सरकारी निवेश मांग में वृद्धि करके निर्यात में हुए संकुचन के असर को अंशतः कम करने में सफल रहा। कोरिया तथा ताइवान के औद्योगिक उत्पादन में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

2.6 डब्ल्यूईओ के अक्टूबर, 2009 निर्गम के आंकड़े यह भी दर्शाते हैं कि एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के सुदृढ़ कार्यनिष्पादन तथा अन्य देशों में स्थिरता आने अथवा स्थिति में थोड़ी बेहतर आने के कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था पुनः वृद्धि की ओर अग्रसर हो रही है। व्यापक स्तर पर किए गए सार्वजनिक हस्तक्षेप ने मांग को बढ़ाने में सहायता की तथा वित्तीय बाजारों में अनिश्चितता तथा प्रणालीगत जोखिम को कम किया। वित्तीय प्रणाली प्रभावित होने, सार्वजनिक नीतिगत समर्थनों को क्रमशः हटाए जाने की जरूरत, तथा आस्ति मूल्यों के चरमरा जाने से प्रभावित अर्थव्यवस्थाओं को उच्च बेरोजगारी का सामना करने के साथ-साथ पारिवारिक इकाइयों की बचत को बढ़ाने की जरूरतों को देखते हुए बहाली की गति मंद रहने की संभावना है।

अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजार

2.7 वैश्विक वित्तीय बाजारों ने पिछले कुछ वर्षों में गंभीरतम में से एक आघात का अनुभव किया। वैश्विक वित्तीय बाजार 2009 की

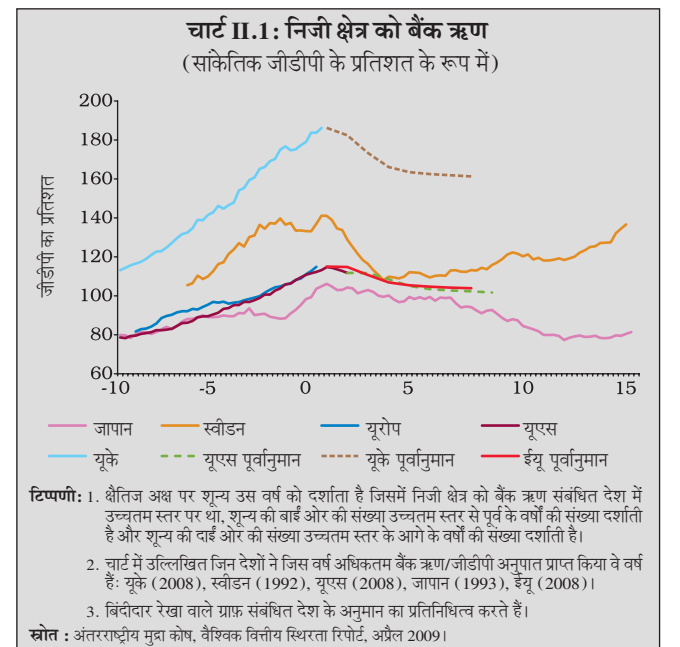
पहली तिमाही तक दबाव में था परंतु बाजार के कुछ खंडों में सुधार के चलते दूसरी तिमाही में इसमें उतार-चढ़ाव तथा जोखिम स्प्रेड में कमी देखी गयी। वास्तविक कार्यकलापों में गिरावट की दर में कमी आने, वित्तीय क्षेत्र के लिए बचाव योजनाओं तथा कुछ प्रमुख बैंकों की हानियों की मात्रा की बेहतर स्पष्टता के कारण जोखिम उठाने के प्रति रुचि में वृद्धि हुई जिसके कारण उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में स्टॉक की कीमतों में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। कतिपय उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में गिरावट के न्यूनतम स्तर को छू लेने की संभावना तथा वैश्विक प्रवृत्ति के चलते इन देशों के इक्विटी बाजारों में तेज सुधार का रुख देखा गया। कतिपय उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में नीतिगत दरों में और कटौती किए जाने के साथ-साथ मुद्रा बाजारों की अच्छी चलनिधि स्थिति के चलते मुद्रा बाजार दरों में गिरावट का रुख रहा तथा स्प्रेड में कमी आने के साथ-साथ बाजारों के विभिन्न खंडों की स्थिति थोड़ी सामान्य हुई। उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं के प्रति निवेशकों की जोखिम लेने की बढ़ती अभिरुचि बांड के स्प्रेड में उल्लेखनीय कमी आने के रूप में परिलक्षित हुई। प्रणाली में पर्याप्त चलनिधि की उपलब्धता के कारण सरकारी बांड के प्रतिफल में कमी आई परंतु सुरक्षित निवेश संबंधी चिंताओं तथा घाटा एवं सार्वजनिक ऋण के बढ़ने की चिंता के चलते दीर्घावधि बांड प्रतिफलों में वृद्धि हुई। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजारों के कतिपय खंडों के कार्यकलापों में सुधार के साथ 2009 की दूसरी तिमाही तथा 2009 की तीसरी तिमाही के शुरुआती समय में स्थिरता के लक्षण दिखाई दिए। लगातार रूप से किए गए नीतिगत उपायों ने बाजार की अनिश्चितता को कम करने में योगदान दिया तथा वित्तीय बाजारों में स्थिरता लाने में मदद की। इनमें मौद्रिक स्थिति को सुगम बनाने के लिए केंद्रीय बैंकों द्वारा किए गए और उपाय, अप्रैल 2009 में घोषित जी-20 की कार्य-योजना, बैंकों के लिए विशेष रूप से अमरीका तथा यूके में विशिष्ट बचाव पैकेज योजना का प्रकाशन तथा यूएस फेड की बैंकों के तनाव परीक्षण आधारित कार्य योजना के परिणामों की घोषणा शामिल हैं।

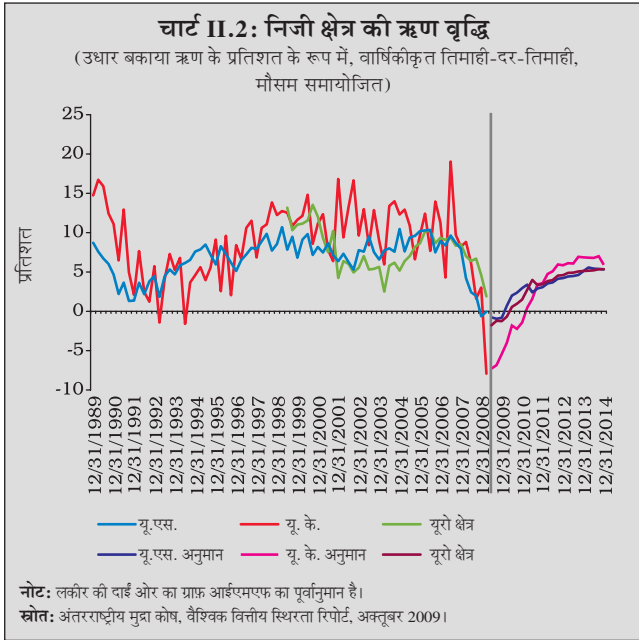
2.8 उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं ने सितंबर 2008 तक संकट से निपटने में उल्लेखनीय आघात-सहनीयता का परिचय दिया, परंतु मुख्यतः तीन वित्तीय चैनलों के जरिए संकट के फैल जाने से वे 2008 की अंतिम तिमाही से दबाव में आ गईं। पहला चैनल विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों का पलायन था जिसके कारण स्टॉक बाजारों में गिरावट आई और इसने निर्यात मांग में तेज कमी लाने के साथ-साथ विदेशी मुद्रा दरों पर उल्लेखनीय दबाव डाला।

दूसरा चैनल बैंकों तथा कंपनियों के लिए विदेशी ऋण के स्रोतों का सूख जाना था जिसके कारण उनकी मांग का रुख घरेलू ऋण बाजारों की ओर हो गया। तीसरा, व्यापार वित्त के स्रोत सूख जाने के कारण व्यापार पर तीव्र प्रतिकूल असर पड़ा। अतः, उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं की मौद्रिक नीति संबंधी कार्रवाई को वित्तीय क्षेत्र से उत्पन्न समस्याओं से निपटने के बजाए वास्तविक अर्थव्यवस्था से उत्पन्न समस्याओं से निपटना पड़ा।

ऋण बाजार

2.9 अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुमान के अनुसार 2010 के अंत तक उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की आर्थिक स्थिति में समायोजन के चलते डिलीवरेजिंग की गति में तेजी आने के कारण वैश्विक ऋण संकुचन की समस्या गहरी हो जाएगी तथा लंबी अवधि तक बनी रहेगी। संकट से पूर्व लीवरेज का जो स्तर बना था वह काफी अधिक था। यूके, यूएस तथा यूरोपियन यूनियन के लिए वर्तमान का दायरा 1990 के जापान के संकट के समान प्रतीत होता है (चार्ट II.1)। आइएमएफ ने आगे यह भी अनुमान लगाया है कि डिलीवरेजिंग की प्रक्रिया का असर अत्यधिक नकारात्मक होने के कारण यूएस तथा यूरोप के देशों में निजी क्षेत्र को प्रदान किये जाने वाले ऋण की मात्रा में तिमाही-दर-तिमाही चार प्रतिशत की वार्षिकीकृत दर पर कमी आने की संभावना है (चार्ट II.2)। ऋण की वृद्धि की दर में कमी





आने पर भी यह कई उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं में 2009 की पहली तिमाही तक दो अंकीय (एक वर्ष पूर्व की स्थिति की तुलना में) बनी रही। कई उभरती बाजार अर्थव्यवस्था में देशी बैंक ऋण की मात्रा में निरंतरता बनी रही अथवा उसमें ऊर्ध्वमुखी प्रवृत्ति देखी गई (चार्ट II.3)।

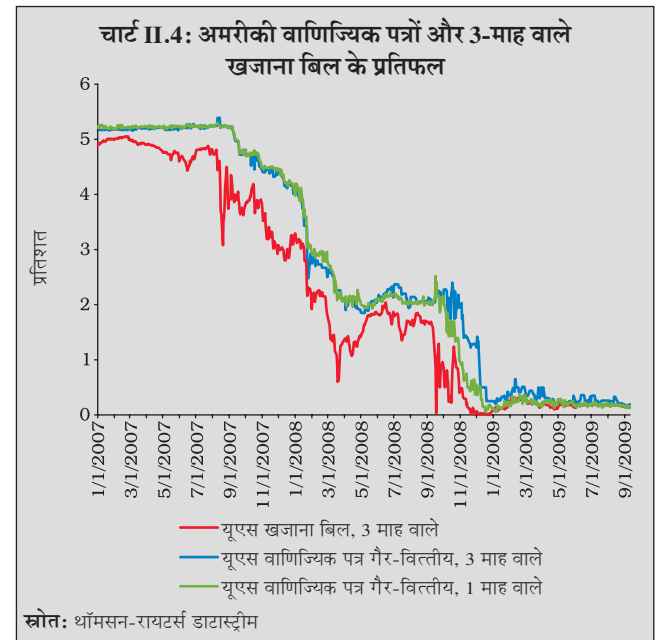
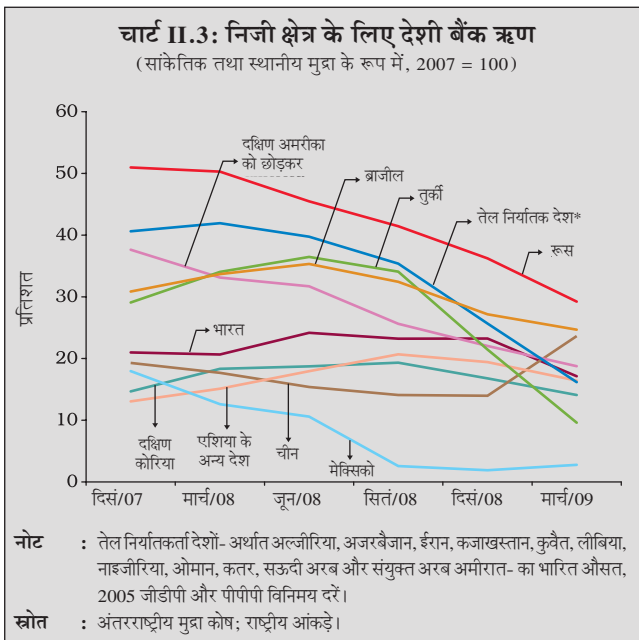
2.10 ऋण बाजार में सार्वजनिक नीतिगत कार्रवाई के कारण यूएस में बैंक ऋण के स्प्रेड में कमी आने तथा उभरती बाजार

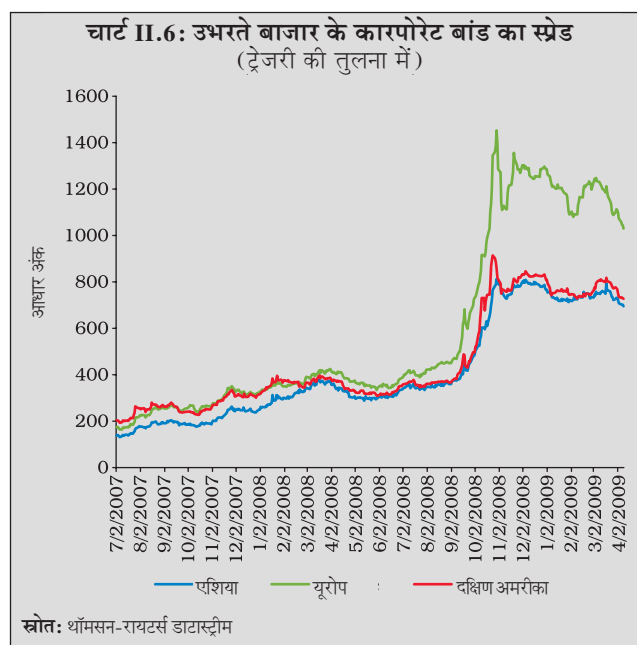
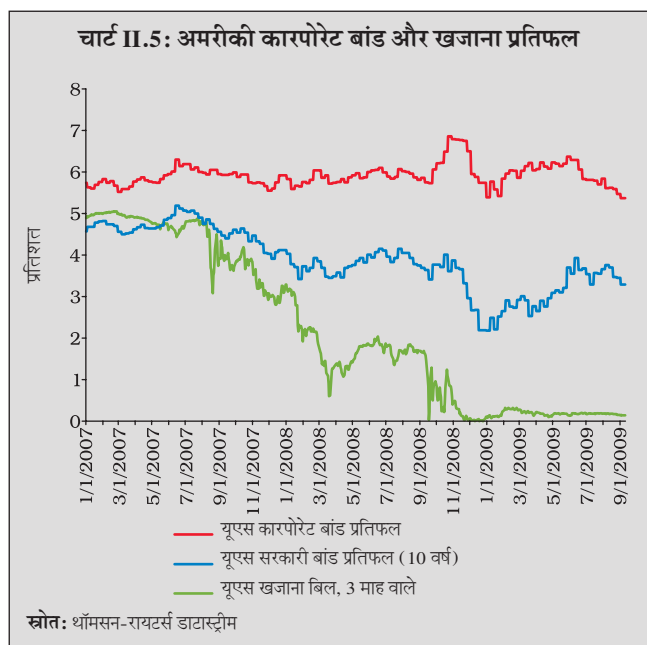
अर्थव्यवस्थाओं में स्थिरता के संकेत उभरने के चलते दूसरी तिमाही में निवेशकों की जोखिम सहनीयता में बढ़ोतरी हुई। तथापि, लीमन ब्रदर्स की घटना के पूर्व के स्तर की तुलना में स्प्रेड उच्चतर स्तर पर बना रहा तथा आस्ति समर्थित प्रतिभूतियों (एबीएस) तथा वाणिज्यिक पत्र (सीपी) बाजारों में कमियां देखी गई (चार्ट II.4)।

कारपोरेट बांड बाजार

2.11 अमरीका में कारपोरेट बांड बाजार सामान्य रूप से कार्य कर रहा है तथा यह बात कारपोरेट बांडों के प्रतिफल, जिसमें 2009 की पहली तिमाही के दौरान 3 माह वाले अमरीकी खजाना बिल एवं 10 वर्षीय अमरीकी सरकारी बांड प्रतिफल की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, से स्पष्ट होती है। तथापि, 2009 की दूसरी तिमाही के उत्तरार्ध में इस अंतर में कमी आई (चार्ट II.5)।

2.12 2009 की प्रारंभिक अवधि के दौरान उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं के कारपोरेट बांडों के स्प्रेड (ट्रेजरी की तुलना में) में भी कमी आई। तथापि, यह स्प्रेड लीमन ब्रदर्स की घटना से पहले के स्तर से अधिक रहा तथा आस्ति समर्थित प्रतिभूति (एबीएस) तथा वाणिज्यिक पत्र बाजारों में कमियां स्पष्ट थीं। सभी विकसित बाजारों में चूक की स्थिति में बेहतर आने की बात 2009 की दूसरी तिमाही में सीडीएस के स्प्रेड में आई कमी से स्पष्ट होती है (चार्ट II.6)।





शेयर बाजार

2.13 इक्विटी के मूल्यों में गिरावट वर्ष 2008-09 की विशिष्टता रही। कई उन्नत तथा उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं

के इक्विटी मूल्य सूचकांकों में 30-66 प्रतिशत के दायरे में गिरावट देखी गई (सारणी II.2)। अंतरराष्ट्रीय इक्विटी बाजारों के आशा और निराशा के बीच - इस बात की आशा कि अर्थव्यवस्थाओं को

सारणी II.2: अंतरराष्ट्रीय शेयर बाजार

देश (सूचकांक)	परिवर्तन, प्रतिशत में (वर्ष-दर-वर्ष)		प्रतिशत परिवर्तन		पी / ई अनुपात			परिवर्तन का गुणांक
	अंत मार्च 2008	अंत मार्च 2009	मार्च 2008 के अंत की तुलना में अगस्त 2008 के अंत में	मार्च 2009 के अंत की तुलना में अगस्त 2009 के अंत में	अंत मार्च 2008	अंत मार्च 2009	अंत अगस्त 2009	
1	2	3	4	5	6	7	8	9
उभरते बाजार								
इंडोनेशिया (जकार्ता कम्पोजिट)	33.7	-41.4	-11.5	63.28	14.7	14.8	29.82	26.6
ब्राजील (बोवेस्पा)	33.1	-32.9	-8.67	38.03	13.8	12	23.48	25.3
थाईलैंड (सेट कम्पोजिट)	21.3	-47.2	-16.23	51.39	16.4	15.1	26.57	27.9
भारत (बीएसई सेंसेक्स)								
दक्षिण कोरिया (कोस्पी)	17.3	-29.2	-13.48	31.97	12.6	26	30.59	20.4
चीन	9.1	-31.7	-30.97	12.41	26.1	23.7	29.57	23.4
ताइवान (ताइवान सूचकांक)	8.7	-39.2	-17.81	31.42	14.3	65.6	159.7	27.6
रूस (आरटीएस)	6.1	-66.4	-19.85	54.65	9.4	4.5	11.5	54.3
मलेशिया (केएलएसई कम्पोजिट)	0.1	-30.1	-11.78	34.58	13.7	14.6	22.74	15.4
सिंगापुर (स्ट्रेट टाइम्स)	-4.9	-43.5	-8.89	52.52	10.8	8.2	20.16	26.5
विकसित बाजार								
अमरीका (डो जोन्स औद्योगिक औसत)	-0.7	-38	-5.87	24.8	15.2	14.1	13.64	19.3
अमरीका (नास्डाक कम्पोजिट)	-5.9	-32.9	3.88	31.43	27.3	22.4	33.25	21.7
यूरो क्षेत्र (एफटीएसई यूरोटॉप 100)	-15.7	-40.1	-4.59	31.25	11.2	15.4	23.18	20.4
यूके (एफटीएसई 100)	-9.6	-31.1	-1.15	25.03	11.4	17.4	70.72	16.8
जापान (निक्केई 225)	-27.5	-35.3	4.37	29.39	15.1	26	-	23.9
हांगकांग (हेंग सेंग)	15.4	-40.6	-6.95	45.29	13.4	12.2	21.24	26.1
जापान:								
एमएससीआई विश्व	-5.1	-44	-6.44	34.82	14.2	15.1	25.55	24.9
एमएससीआई उभरते बाजार	18.9	-48.4	-13.44	47.28	13.1	12	19.18	34

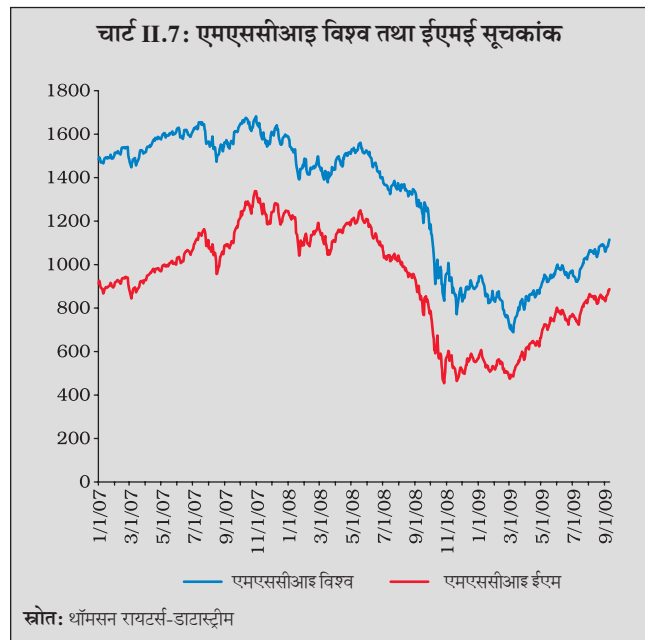
स्रोत: ब्लूमबर्ग और बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड (बीएसई)

प्रोत्साहित करने में नीतियां कारगर होंगी तथा निराशा इस बात की कि वर्तमान दौर के वित्तीय संकट से उत्पन्न समस्याएं बनी रहेंगी - अनिश्चय की स्थिति में रहने के कारण वर्ष के दौरान बाजारों में उतार-चढ़ाव तीव्र था। तथापि, 2009-10 के दौरान अब तक (अप्रैल-अगस्त) उभरती तथा उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में इक्विटी बाजारों में वृद्धि का रुख देखा गया। इंडोनेशिया, भारत, रूस, सिंगापुर तथा थाईलैंड ऐसे देश थे जिनमें मार्च 2009 के अंत तक इक्विटी बाजारों में 50 प्रतिशत से भी अधिक की बढ़ोतरी हुई।

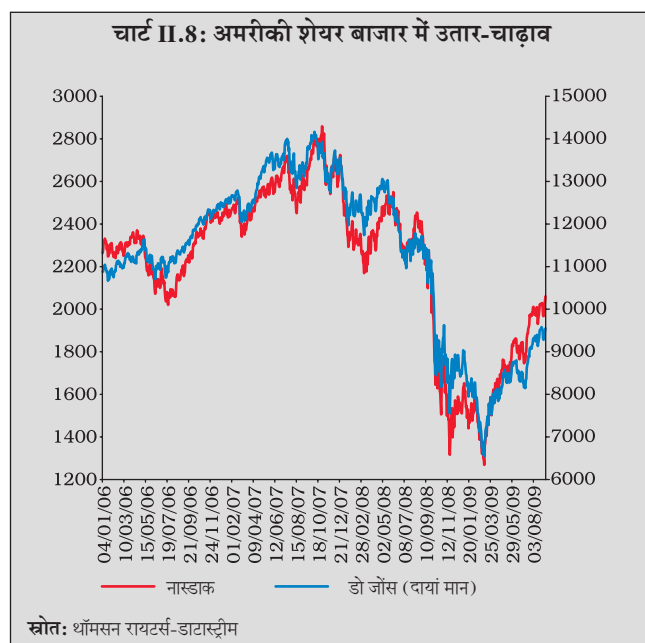
2.14 उन्नत तथा उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं के इक्विटी बाजारों में मार्च 2009 से उल्लेखनीय बहाली हुई, हालांकि प्रतिकूल समाचारों के कारण बीच-बीच में कमियां भी आईं। यद्यपि उत्पादन में कमी आने के कारण अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं में गतिविधियों में गिरावट देखी गई, फिर भी आर्थिक कार्यक्रमों में गिरावट की गति में कमी आने संबंधी समष्टि आर्थिक आंकड़ों तथा कुछ अर्थव्यवस्थाओं में गिरावट का स्तर निम्नतम तक पहुंच जाने के प्राथमिक संकेतों के चलते बाजारों में वृद्धि का रुख रहा। अधिकांश विकसित बाजारों ने अप्रैल-अगस्त 2009 के दौरान सूचकांक में 25 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दर्ज की। इसी अवधि के दौरान एमएससीआइ उभरते बाजार सूचकांक तथा एमएससीआइ विश्व सूचकांक ने क्रमशः 47.3 प्रतिशत तथा 34.8 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की (चार्ट II.7)। मार्च 2009 के बाद अमरीकी स्टॉक बाजार में भी उल्लेखनीय बहाली हुई (चार्ट II.8)। शेयर बाजारों में आए सुधार का स्तर कुछ व्यापक था जो कारपोरेट अर्जनों की बेहतर संभावनाओं तथा स्पष्ट सार्वजनिक नीति कार्रवाइयों के कारण वित्तीय क्षेत्र में अनिश्चितता में कमी आने के चलते वित्तीय, औद्योगिक तथा उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं सुधार आने के कारण था।

विदेशी मुद्रा बाजार

2.15 2008-09 के दौरान जापानी येन तथा चीनी युआन को छोड़कर अधिकांश मुद्राओं की तुलना में डॉलर के मूल्य में सामान्यतः वृद्धि हुई। अमरीकी डॉलर ने वृद्धि दर में गिरावट आने, उपभोक्ता के विश्वास में कमी आने, कमजोर इक्विटी बाजार तथा गैर-फार्म पेट्रोल रोजगार की स्थिति में गिरावट आने जैसे कारकों के चलते अप्रैल-जुलाई 2008 के दौरान सभी प्रमुख मुद्राओं के विपरीत मूल्य



में गिरावट की कमजोर स्थिति के साथ वर्ष की शुरुआत की। तथापि, अगस्त के 2008 प्रारंभ से अमरीकी वित्तीय संकट के कारण वहां के निवेशकों की जोखिम उठाने की अभिरुचि में कमी आने के कारण अमरीकी डॉलर में मजबूती आनी शुरू हुई जिसके कारण उन्होंने वित्तीय बाजारों की डिलीवरेजिंग प्रक्रिया के हिस्से के रूप में विदेशी इक्विटी तथा बांड बाजारों के निवेशों को समेटकर सुरक्षा की दृष्टि से राशि को अमरीका में प्रत्यावर्तित करना शुरू कर दिया। 2009-10



के दौरान अब तक अमरीका में सुरक्षित निवेश प्रवाह में कमी आने, हाल के समय में उनके द्वारा बड़े स्तर पर मात्रात्मक नरमी का रुख अपनाने तथा डॉलर के प्रति बाजार की धारणा में बदलाव आने के कारण डॉलर के मूल्य में वृद्धि की प्रवृत्ति में बदलाव आया। मार्च 2009 के अंत तथा अगस्त 2009 के अंत के बीच अमरीकी डॉलर के मूल्य में यूरो, पौंड स्टर्लिंग तथा जापानी येन की तुलना में क्रमशः 6.8 प्रतिशत, 12.2 प्रतिशत तथा 5.5 प्रतिशत की कमी आई। एशियाई मुद्राओं के बीच भारतीय रुपए, इंडोनेशियाई रुपिया, मलेशियाई रिंगिट, दक्षिण कोरियाई वॉन तथा थाई बाथ की तुलना में इसके मूल्य में कमी आई।

ओवर दि काउंटर व्युत्पन्नी (डेरिवेटिव)

2.16 2008 की दूसरी छमाही में वित्तीय संकट के परिणामस्वरूप ओवर-दि-काउंटर व्युत्पन्नियों की कुल कल्पित बकाया राशि घटकर वर्ष के अंत में 592 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर हो गयी जो बाजार गतिविधियों के घटे हुए स्तर को दर्शाती है। 1998 के बाद गिरावट की यह पहली घटना है। विदेशी मुद्रा बाजार तथा ब्याज दर व्युत्पन्नी बाजार दोनों में पहली बार उल्लेखनीय गिरावट आई (सारणी II.3)।

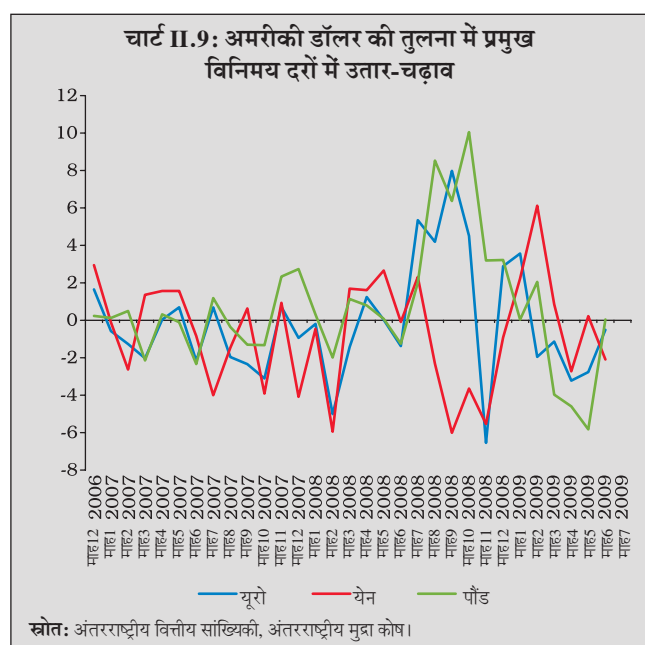
2.17 बकाया राशि में गिरावट के बावजूद, मूल्य में उल्लेखनीय उतार-चढ़ाव के कारण सकल बाजार मूल्य में वृद्धि हुई और 2008

के अंत में यह राशि 34 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर हो गई। सकल बाजार मूल्य सभी विद्यमान संविदाओं के प्रतिस्थापन मूल्य का मापक है और इसका उपयोग व्युत्पन्नियों से संबंधित एक्सपोजर को निर्धारित करने में किया जाता है। द्विपक्षीय समायोजन करारों को हिसाब में लेने के बाद उच्चतर बाजार मूल्य सकल प्रतिस्थापन मूल्य में भी परिलक्षित हुआ, जिसे सकल क्रेडिट एक्सपोजर भी कहा जाता है, और यह लगभग एक तिहाई बढ़कर 5 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। 2008 की दूसरी छमाही में ब्याज दर व्युत्पन्नियों के बाजार में पहली बार संकुचन हुआ जिसके कारण इन लिखतों की कल्पित बकाया राशि घटकर 419 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर हो गई। फिर भी घटती ब्याज दर के कारण सकल बाजार मूल्य बढ़कर लगभग दुगुना हो गया। ब्याज दर स्वैप, जो कि बाजार का सबसे बड़ा खंड है, के सकल बाजार मूल्य ने 17 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर के स्तर को छू लिया। अमरीकी डॉलर स्वैप बाजार में सबसे उल्लेखनीय वृद्धि हुई जिसका सकल बाजार मूल्य बढ़कर लगभग तीन गुना हो गया।

2.18 वैश्विक वित्तीय बाजारों में सुधार के बावजूद अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजार सरकारी समर्थन पर अत्यधिक निर्भरता, देशों पर ऋण के बढ़ते बोझ से उत्पन्न चिंताओं तथा मौद्रिक नरमी के रुख को भविष्य में समाप्त करने की रणनीति एवं राजकोषीय समर्थन के संबंध में अस्पष्टता के कारण अति नाजुक स्थिति में है।

3. वैश्विक बैंकिंग की प्रवृत्ति

2.19 वर्तमान वैश्विक वित्तीय संकट के कुछ संभावित कारण अत्यधिक दोषपूर्ण संस्थाओं तथा नये वित्तीय ढांचों (एनएफए)-वैश्विक रूप से एकीकृत बृहदाकार बैंक संगुटों की प्रणाली तथा निवेश बैंकों की तथाकथित 'छाया बैंकिंग प्रणाली', बचाव निधियों तथा बैंक द्वारा सृजित विशेष निवेश माध्यमों - के व्यवहारों में खोजे जा सकते हैं। ये संस्थाएं दक्ष पूंजी बाजार के वित्तीय आर्थिक सिद्धांत की एक व्यवस्था थी तथा इन पर विनियमन का स्तर काफी कम था। एनएफए ने एक के बाद एक अब तक के सबसे बड़े वित्तीय संकटों को जन्म दिया जिनका समाधान बृहदाकार सरकारी बचाव उपायों से किया गया।



सारणी II.3: वैश्विक ओवर-दि-काउंटर व्युत्पन्नी बाजार का शेष

(बिलियन अमरीका डॉलर में)

1	सकितिक राशियाँ					सकल बाजार मूल्य				
	दिसं. 2006	जून 2007	दिसं. 2007	जून 2008	दिसं. 2008	दिसं. 2006	जून 2007	दिसं. 2007	जून 2008	दिसं. 2008
	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
कुल	4,18,131	5,16,407	5,95,341	6,83,725	5,91,963	9,791	11,140	15,813	20,353	33,889
विदेशी मुद्रा	40,271	48,645	56,238	62,983	49,753	1,266	1,345	1,807	2,262	3,917
वायदा और विदेशी मुद्रा स्वैप्स	19,882	24,530	29,144	31,966	24,562	469	492	675	802	1,732
मुद्रा स्वैप्स	10,792	12,312	14,347	16,307	14,725	601	619	817	1,071	1,588
ऑप्शन्स	9,597	11,804	12,748	14,710	10,466	196	235	315	388	597
ब्याज दर	2,91,581	3,47,312	3,93,138	4,58,304	4,18,678	4,826	6,063	7,177	9,263	18,420
वायदा दर करार	18,668	22,809	26,599	39,370	39,262	32	43	41	88	153
स्वैप्स	2,29,693	2,72,216	3,09,588	3,56,772	3,28,114	4,163	5,321	6,183	8,056	16,573
ऑप्शन्स	43,221	52,288	56,951	62,162	51,301	631	700	953	1,120	1,694
इक्विटी सहबद्ध	7,488	8,590	8,469	10,177	6,494	853	1,116	1,142	1,146	1,113
वायदा और स्वैप्स	1,767	2,470	2,233	2,657	1,632	166	240	239	283	338
ऑप्शन्स	5,720	6,119	6,236	7,520	4,862	686	876	903	863	775
पण्य	7,115	7,567	8,455	13,229	4,427	667	636	1,899	2,209	955
सोना	640	426	595	649	395	56	47	70	68	65
अन्य	6,475	7,141	7,861	12,580	4,032	611	589	1,829	2,142	890
वायदा और स्वैप्स	2,813	3,447	5,085	7,561	2,471
ऑप्शन्स	3,663	3,694	2,776	5,019	1,561
क्रेडिट डिफॉल्ट स्वैप्स	28,650	42,580	57,894	57,325	41,868	470	721	2,002	3,172	5,652
एकल-नाम लिखतें	17,879	24,239	32,246	33,334	25,730	278	406	1,143	1,889	3,695
बहु-नाम लिखतें	10,771	18,341	25,648	23,991	16,138	192	315	859	1,283	1,957
अनाबंटित	43,026	61,713	71,146	81,708	70,742	1,709	1,259	1,788	2,301	3,831
<i>ज्ञापन मदें:</i>										
सकल ऋण एकसपोजर	ला.न.	ला.न.	ला.न.	ला.न.		2,036	2,672	3,256	3,859	5,004

स्रोत: अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक (2009), तिमाही समीक्षा, सितम्बर

2.20 इस ढांचे की कुछ मौलिक खामियां निम्नानुसार हैं :

1) विनियामकों ने एनएफए अर्थात दक्ष पूंजी बाजार के कमजोर तथा गंभीर रूप से भ्रामक सैद्धान्तिक आधार को मान लिया है; 2) एनएफए में अंतर्निहित प्रोत्साहनों के कारण उत्पन्न नैतिक जोखिम, जिसने वित्तीय बाजारों को अत्यधिक जोखिम उठाने के लिए प्रेरित किया; 3) बंधक समर्थित प्रतिभूतियों जैसे कतिपय नवोन्मेषी वित्तीय उत्पाद इस कदर जटिल तथा अपारदर्शी थे कि संभवतः उनका सही मूल्यन नहीं किया जा सकता था तथा तेजी का अत्यधिक उत्साह समाप्त होते ही ये धराशायी हो गए; तथा 4) एनएफए ने संक्रमण के चैनलों, जिन्होंने अमरीकी सबप्राइम

बंधक बाजार की समस्या का संक्रमण सारे विश्व में किया, के साथ अत्यधिक लीवरेज तथा उच्च प्रणालीगत जोखिम को जन्म दिया।

2.21 समग्र रूप में, उपर्युक्त कारक प्रतिभूतिकरण के व्यापक उपयोग सहित बड़े निवेश बैंकों, संस्थागत निवेशकों तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं द्वारा अदा की गयी बड़ी भूमिका को दर्शाते हैं। विश्व स्तर पर वित्तीय आस्तियों के पूंजी मूल्यांकन में हुई हानि की राशि 50 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर से भी अधिक हो गई होगी। पूंजी की मात्रा में हुई हानि की घटना अति महत्वपूर्ण है तथा हानि की राशि लगभग एक वर्ष की वैश्विक जीडीपी¹ के बराबर है।

¹ लोसर, क्लॉडिओ एम (2009) ग्लोबल फिनांसियल टारमोयल एंड इमर्जिंग मार्केट इकॉनॉमिज: मेजर कंटाजियन एंड ए शॉकिंग लॉस ऑफ वेल्थ? एशियाई विकास बैंक।

वैश्विक वित्तीय संकट : क्रमविकास तथा उसके चरण

2.22 अविनियमन ने 1980 के दशक के प्रारंभिक समय से वित्तीय आस्तियों को वास्तविक क्षेत्र की तुलना में तेज गति से बढ़ने में मदद की और इस प्रक्रिया को तेजी से बढ़ाने में 1990 के दशक के उत्तरार्ध शेयर बाजार की तेजी, 1990 के दशक के परवर्ती समय में प्रारंभ हुए बंधक-आवास में तेजी तथा पिछले दशक में हुए वित्तीय नवोन्मेष की तेज गति ने मदद की। 1980 के दशक के उथल-पुथल से संभलने के बाद जीडीपी की तुलना में वित्तीय क्षेत्र के लाभ में 1990 के दशक के प्रारंभ से अंत तक वृद्धि हुई तथा 2002 के बाद इसमें और तेजी आई।

2.23 2007 की दूसरी छमाही में प्रारंभ हुए हाल के वैश्विक वित्तीय संकट को विशेषताओं के आधार पर पांच चरणों में विभाजित किया जा सकता है अर्थात् (1) संकट का प्रारंभ, मार्च 2008 में बिअर स्टर्नस् का अधिग्रहण किए जाने तक; (2) मार्च के मध्य से वित्तीय स्थितियों में निरंतर गिरावट से 15 सितंबर 2008 को लीमन ब्रदर्स के विफल हो जाने तक; (3) सितंबर के मध्य से अक्टूबर के बाद के समय तक, जिस दौरान वैश्विक स्तर पर विश्वास में कमी आयी, गुणवत्ता की ओर तेजी से अग्रसर होने की आपाधापी मची तथा वित्तीय प्रणाली लगभग धराशायी हो गयी; (4) अक्टूबर के उत्तरार्ध से वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारी गिरावट; तथा (5) मार्च 2009 के प्रारंभ में गिरावट की गंभीरतम स्थिति तथा स्थिरता के प्राथमिक संकेत (बॉक्स II.1) तथा (चार्ट II.10)।

बैंक लाभप्रदता

2.24 पोर्टफोलियो (प्रतिभूतियों के) के बाजार दरों पर मूल्यांकन किये जाने के कारण हुई हानियों तथा आर्थिक मंदी के गहराने से ऋण बहियों में आई निरंतर गिरावट के कारण पिछले वर्ष बैंकों की लाभप्रदता में भारी गिरावट हुई। यद्यपि, बैंकों के लाभ में हुई गिरावट एक वैश्विक प्रवृत्ति थी, फिर भी संकट के कारण बैंकों पर जो असर पड़ा उसमें संबंधित देश के बाजारों की स्थितियों के अनुसार भिन्नता थी।

2.25 2008 में अमरीका के बैंकों का कर पूर्व लाभ पिछले वर्ष की तुलना में आधे से भी अधिक घट गया (सारणी II.4)। तथापि, पूरे वर्ष का परिणाम दूसरी छमाही में हुई तेज गिरावट को प्रकट नहीं करता। उदाहरणस्वरूप, अमरीका के तीन में से एक बैंक ने चौथी

तिमाही में हानि उठाई तथा समग्र क्षेत्र ने 1990 के बाद पहली बार तिमाही हानि दर्शाई। निवल ब्याज मार्जिन में, विशेष रूप से उन छोटे बैंकों के निवल ब्याज मार्जिन में भी कमी आई जो अपनी जमाराशि की दर को घटा नहीं पाए। 2008 में अमरीका में बैंक विफलता की बाढ़-सी आ गई। 372 बिलियन अमरीकी डॉलर की समग्र आस्तियों के साथ जमाराशि लेने वाली 25 संस्थाएं विफल हो गईं और यह राशि 1993 में हुई बैंक विफलता की अधिकतम राशि से 10 गुना अधिक है। वाशिंगटन म्यूच्युअल की विफलता की राशि कुल में से 307 बिलियन अमरीकी डॉलर थी तथा अमरीकी बैंक विफलता के इतिहास में यह सबसे बड़ी बैंक विफलता थी। विफल हुए बैंकों के अलावा, अमरीका के जमाराशि बीमाकर्ता के समस्याग्रस्त बैंकों की सूची में शामिल संस्थाओं की संख्या बढ़कर 252 हो गई और इनकी राशि 159 बिलियन अमरीकी डॉलर थी। इसके अतिरिक्त, बड़ी विफलताओं को रोका गया क्योंकि कमजोर संस्थाओं को अच्छी आर्थिक स्थिति वाली संस्थाओं ने ले लिया था।

2.26 यूरोप में, 2008 में बैंक के कार्यनिष्पादन का सामान्य परिदृश्य मोटे तौर पर उत्तर अमरीका की तरह था। लाभ में सभी स्तरों पर कमी आई तथा समूह के रूप में नीदरलैंड, स्विटजरलैंड तथा यूनाइटेड किंगडम के सबसे बड़े बैंकों ने निवल हानि उठायी। आयरलैंड, स्पेन तथा यूनाइटेड किंगडम में पूर्व में अचल आस्तियों की कीमतों में जिस बड़े स्तर की तेजी आई उसने अचल आस्तियों के बाजार में नरमी आने के बाद विशेष रूप से बैंकों के लिए बड़ी चुनौती पैदा की। अचल आस्तियों के एक्सपोजर से कतिपय जर्मन बैंक भी प्रभावित हुए, अलबत्ता ये बैंक मुख्यतः प्रतिभूतियों की स्थिति तथा वाणिज्यिक संपत्ति के प्रति एक्सपोजर के कारण परोक्ष रूप से प्रभावित हुए। फ्रांस तथा इटली के बैंक घरेलू खुदरा बाजार के प्रति उनके तीव्र फोकस के कारण संरचित वित्तीय निवेशों के कारण हुई हानियों से कम प्रभावित हुए। जापानी बैंकों की लाभप्रदता अंशतः ढांचागत रूप से संकीर्ण निवल ब्याज मार्जिन के चलते कमजोर रही। इसके परिणामस्वरूप उनका पूंजीगत आधार कमजोर हुआ।

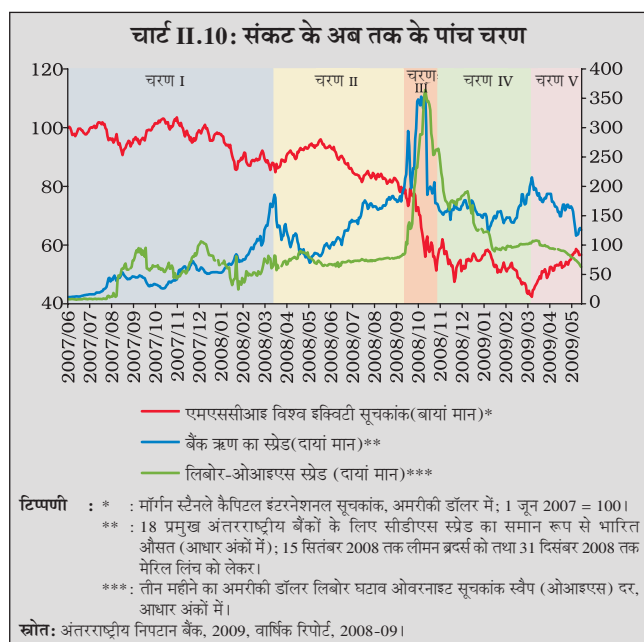
बैंक हानियों की संरचना

2.27 पिछले वर्ष के दौरान समष्टि आर्थिक स्थितियों में गिरावट होने से संस्थाओं ने अर्जन को बनाए रखने के दबाव तथा ऋण

बॉक्स II.1: वैश्विक वित्तीय संकट: क्रमविकास और उसके चरण

संकट के चरण	बाजार और संस्थाएं	औद्योगिक अर्थव्यवस्थाएं		उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाएं	
		समष्टि आर्थिक स्थितियां	नीतिगत उपाय	समष्टि आर्थिक स्थितियां	नीतिगत उपाय
1. मार्च 2008 से पूर्व: संकट का प्रारंभ	सबप्राइम बंधक चूक के कारण व्यापक वित्तीय दबाव। हानियों के आकार तथा वितरण के संबंध में अनिश्चितता। अगस्त 2007 में अंतर बैंक बाजारों में व्यवधान आने पर संकट का प्रारंभ हुआ; मार्च 2008 तक इसकी तीव्रता में वृद्धि हुई।	वृद्धि दर में कमी आई।	केन्द्रीय बैंक (सीबी) दरों में कटौती। चलनिधि का परिचालन मुद्रा बाजारों को ध्यान में रखकर किया गया।	मुद्रास्फीति के साथ-साथ सुदृढ़ वृद्धि भी हुई। कई मुद्रास्फीति लक्ष्यकर्ताओं ने अपने लक्ष्य से अधिक का लक्ष्य निर्धारण किया।	उच्च मुद्रास्फीति के कारण नीतिगत दरों में वृद्धि।
2. मार्च के मध्य से मध्य सितंबर 2008 तक: लीमन की ओर	मार्च में बिअर स्टर्नस के अधिग्रहण के बाद गिरावट की दर में कमी आई, परंतु आस्तियों की कीमतों में गिरावट आने से बैंकों की हानियों तथा राइट डाउन में वृद्धि हुई। और अधिक देश प्रभावित हुए। चलनिधि संकट से अंतर्निहित शोध-क्षमता संकट का उजागर हुआ, वित्तीय संस्थाओं पर दबाव में वृद्धि हुई	अगस्त के बाद तेल की कीमतों में तीव्र गिरावट के बावजूद जी3 की अर्थव्यवस्थाओं में संकुचन हुआ।	प्रारंभ में दरों में और कटौती की गई। चलनिधि सुविधाएं बढ़ाई गयीं। सितंबर के प्रारंभ में सरकार द्वारा प्रायोजित उद्यमों को संरक्षण में रखा गया	जून के बाद जीडीपी वृद्धि दर में कमी आई परंतु यह धनात्मक रही। केन्द्रीय यूरोप के देशों के निर्यात में गिरावट आई।	उच्च मुद्रास्फीति के कारण दरों में पुनः बढ़ोतरी की गई।
3. 15 सितंबर 2008 से अक्टूबर 2008 के उत्तरार्ध तक: वैश्विक स्तर पर विश्वास के स्तर में गिरावट	15 सितंबर 2008 को लीमन ब्रदर्स की समाप्ति के कारण निधि प्रदान करने वाले प्रमुख बाजारों में आपाधापी मच गई। कई और वित्तीय संस्थाएं विफल हो गईं अथवा उन्हें बचा लिया गया। विश्वास की कमी ने वैश्विक स्तर पर बाजारों तथा देशों को प्रभावित किया। अभूतपूर्व तथा व्यापक नीतिगत हस्तक्षेप के बाद ही स्थिति में सुधार आया।	विश्वास में कमी आने तथा वित्तपोषण की सख्त स्थिति के चलते पूर्वानुमानों को संशोधित करके काफी कम किया गया।	दरों में तेज कटौती की गई, सीबी स्वैप लाइनों को विस्तारित किया गया, सीबी के तुलनपत्र में तेज वृद्धि हुई, व्यापक स्तर पर बैंकों को बचा लिया गया, जमाराशि तथा ऋण की गारंटी दी गई।	विश्वास के स्तर में गिरावट हुई। वित्तपोषण की स्थितियां सख्त हो गईं। मुद्राओं के मूल्य में तेज गिरावट हुई।	दरों में कटौती की गई, केन्द्रीय बैंक चलनिधि की अधिक लचीली व्यवस्था की गई। जमाराशियों तथा ऋणों के लिए गारंटियां दी गईं। अधिक पूंजी डाली गई।
4. अक्टूबर 2008 के उत्तरार्ध से मार्च 2009 के मध्य तक: वैश्विक मंदी	बिगडती आर्थिक स्थिति संबंधी आंकड़ों, आय में गिरावट संबंधी रिपोर्टों के सामने आने, वर्तमान के सरकारी हस्तक्षेप के बारे में अनिश्चितता के कारण बाजारों में उतार-चढ़ाव बना रहा। मंदी से हानियों की मात्रा में बढ़ोतरी हुई।	खर्च में कमी आने से वस्तुओं के व्यापार तथा जीडीपी में गिरावट आई। कुछ देशों में कीमतों के स्तर में कमी आने से मुद्रास्फीति में गिरावट आई।	दरों में कटौती करके शून्य के आसपास के स्तर तक लाया गया, गैर-बैंकों को चलनिधि मुहैया कराई गई। सार्वजनिक ऋण की सीधी खरीद की गई। बड़े राजकोषीय प्रोत्साहन पैकेज लाए गए।	04, 2008 में जीडीपी वृद्धि दर में तेजी से कमी आई। पूंजी अंतर्वाह में विपर्यय आया।	दरों में पुनः कटौती की गई, रिजर्व संबंधी अपेक्षाओं को कम किया गया। विदेशी मुद्रा बाजारों में हस्तक्षेप किए गए, सीबी स्वैप लाइनों में विस्तार किया गया। कुछ ईएमई में बड़े राजकोषीय प्रोत्साहन पैकेज लाए गए।
5. मार्च 2009 के मध्य के बाद: मंदी गहराई लेकिन गिरावट की गति कम हुई	अधिक नीतिगत कार्रवाई के बाद आस्तियों के मूल्यों में कुछ सुधार हुआ। परंतु, वैश्विक वित्तीय प्रणाली में पूर्णतः विश्वास बहाली में आधिकारिक प्रयास विफल होने के कारण बाजार के कार्य सुचारु रूप से न चलने के लक्षण बने हुए हैं। ऋण हानियां जारी रहीं।	गिरावट के निम्नतम स्तर को छू लेने के संभावित लक्षणों के कारण उपभोग तथा उत्पादन में गिरावट जारी रही।	कुछ देशों में दरों में और कटौती की गई। बैंकों के लिए लेखाविधि नियमों को सरल बनाया गया।	इक्विटी बाजार संभला तथा विनिमय दर में स्थिरता आई।	ईएमई को समर्थन देने के लिए बाह्य आधिकारिक वित्तपोषण को बढ़ाया गया।

स्रोत: अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक 2009, वार्षिक रिपोर्ट, 2008-09।



बाजार दर पर इन्हें आंके जाने पर इनके मूल्यों में उल्लेखनीय कमी हुई (सारणी II.5)। जहां हानियों की मात्रा तथा प्रणाली में उनके वितरण के बारे में उल्लेखनीय रूप से अनिश्चितता की स्थिति है वहीं यह धारणा है कि ये हानियां आस्तियों की कतिपय श्रेणियों में निहित रही।

2.28 सामान्य आर्थिक मंदी, विशेष रूप से सितंबर तथा अक्टूबर 2008 की घटना के बाद विश्वास में वैश्विक स्तर पर आए संकट के बाद से जिसने संकट के बाद के चरण को जन्म दिया, का स्पष्ट अर्थ था कि बैंक हानियों का सीधा संबंध समष्टि आर्थिक कार्यानिष्पादन से है। इस अवधि में अधिकांश हानियां उधारकर्ताओं की चूक से प्रत्यक्ष रूप से तथा प्रत्याशित चूक से संबंधित था जैसा कि राशि में वृद्धि तथा प्रावधान संबंधी राशि के तुलनात्मक महत्व से स्पष्ट होता है। बैंक आस्तियों के हिस्से के रूप में ऋण हानि प्रावधान की राशि 2008 में पिछले वर्षों की तुलना में वैश्विक स्तर पर उच्चतर था (सारणी II.5)। 2007 की तुलना में, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, स्विट्स तथा अमरीका के बैंकों के लिए ये दरें कम से कम दुगुनी हो गईं तथा जर्मन, डच तथा स्वीडिस उधारदाताओं के लिए तो ये दरें उससे भी अधिक थीं। कमजोर आर्थिक कार्यकलापों के कारण निजी क्षेत्र की ऋण चुकाने की क्षमता पर पड़ने वाले संभावित प्रतिकूल असर देखते हुए ऋण की लागत उच्चतर रहने की संभावना है। रेटिंग एजेंसियों का अनुमान है कि कारपोरेट चूक की घटनाओं में वृद्धि होने की संभावना है। इसके

जोखिम एक्सपोजर पर बढ़ती हानियों का सामना किया। बैंक हानियों की बदलती संरचना से उद्योग द्वारा सामना की जा रही समस्या की प्रकृति में आए बदलाव का पता चलता है। संकट के प्रथम चरण के दौरान बही मूल्य में आई गिरावट का संबंध संरचित वित्तीय उत्पादों के ट्रेड किए गए पोर्टफोलियो तथा सबप्राइम बंधक बाजार के प्रति प्रतिभूतिकृत एक्सपोजर से था। इन लिखतों के बाजार में तरलता समाप्त हो जाने से हानियों की मात्रा और बढ़ गई जिसके कारण

सारणी II.4: प्रमुख बैंकों की लाभप्रदता
कुल औसत आस्तियों के प्रतिशत के रूप में

I	कर पूर्व लाभ			निवल ब्याज मार्जिन			ऋण हानि प्रावधान			परिचालन लागत		
	2006	2007	2008	2006	2007	2008	2006	2007	2008	2006	2007	2008
	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
ऑस्ट्रेलिया	1.54	1.42	0.95	1.87	1.70	1.66	0.12	0.13	0.26	1.56	1.38	1.51
ऑस्ट्रिया	1.48	1.12	0.66	1.72	1.95	2.10	0.34	0.24	0.45	2.17	2.11	2.29
कनाडा	1.22	1.12	0.48	1.52	1.48	1.42	0.09	0.13	0.21	2.37	2.27	2.00
फ्रांस	0.73	0.41	0.05	0.59	0.49	0.70	0.05	0.09	0.21	1.20	1.19	1.23
जर्मनी	0.43	0.25	-0.41	0.51	0.51	0.63	0.05	0.05	0.19	0.96	0.88	1.18
इटली	1.05	0.88	0.29	1.77	1.68	1.94	0.25	0.25	0.42	2.18	1.99	2.31
जापान	0.46	0.29	0.12	0.48	0.49	0.50	0.04	0.11	0.19	0.49	0.55	0.65
नीदरलैंड	0.48	0.30	-0.79	1.03	0.85	0.96	0.10	0.09	0.27	1.13	1.01	1.33
स्पेन	1.37	1.44	1.10	1.64	1.72	1.83	0.31	0.37	0.53	1.75	1.77	1.89
स्वीडन	0.96	0.89	0.67	0.98	0.97	0.99	-0.02	0.02	0.11	0.99	0.96	1.00
स्विट्जरलैंड	0.80	0.38	-1.94	0.51	0.53	0.49	0	0.03	0.07	1.53	1.78	2.55
यूके	0.90	0.74	-0.10	1.16	1.02	0.81	0.25	0.22	0.40	1.56	1.37	1.28
यूएस	1.71	0.98	0.36	2.35	2.28	2.16	0.19	0.51	1.11	2.95	3.31	3.44

स्रोत : अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक, (2009) वार्षिक रिपोर्ट 2008-09।

सारणी II.5: घोषित बैंक घाटे की संरचना बिलियन अमरीका डॉलर में

	2007 छ2	2008 छ1	2008 छ2	2009 ति1
1	2	3	4	5
प्रतिभूतियां	120.5	97.0	106.1	21.0
प्रावधान	39.2	96.9	149.3	43.9
अचल संपत्ति	3.2	11.6	55.9	3.0
लीवरेज वाले ऋण	8.3	16.4	10.4	2.0
मॉर्गनलाइंस	7.4	26.5	13.7	13.3
अन्य	27.4	47.7	100.4	10.6
कुल	206.0	296.0	435.8	93.7

टिप्पणी: घाटे को मूल मुद्रा में हुई कमी के रूप में परिभाषित किया गया है जिसे अवधि के अंत की विनिमय दरों पर अमरीकी डॉलर में परिवर्तित करके दिखाया गया है। यह वर्गीकरण बड़े अंतरराष्ट्रीय बैंकों द्वारा किए गए प्रकटीकरणों पर आधारित है और हो सकता है कि रिपोर्ट करने वाले सभी संस्थानों के बीच ये पूर्णतः तुलनीय न हों।

स्रोत: अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक, (2009), वार्षिक रिपोर्ट, 2008-09।

अतिरिक्त, बैंकों के पारिवारिक इकाई ऋण पोर्टफोलियो का कार्यनिष्पादन आय में संकुचन की अवधि तथा उसकी गहनता पर निर्भर करेगा। अमरीकी बैंकों के क्रेडिट कार्ड पोर्टफोलियो की समस्या के प्रारंभिक संकेत दर्शाते हैं कि इसका असर पारंपरिक अनुभव के विपरीत बेरोजगारी से चूक की ओर अंतरित होगा। वित्तीय क्षेत्र कार्यनिष्पादन, ऋण की आपूर्ति तथा उधारकर्ता की ऋण चुकाने की क्षमता के बीच आपसी संबंधों से स्पष्ट होता है कि बैंकों के लिए समग्र परिदृश्य बड़ी अनिश्चितताओं वाला होगा।

2.29 आधुनिक वित्तीय प्रणाली अत्यंत जटिल है और उनके बीच के आपसी सह-संबंध प्रणालीगत जोखिम को जन्म देते हैं। वित्तीय प्रणाली विश्वास पर आधारित है और लीमन की विफलता के बाद यह विश्वास समाप्त हो गया है। पिछले कुछ वर्षों दौरान वित्त की इस आवश्यक तथा जटिल प्रणाली को गंभीर रूप से क्षति पहुंची है। गंभीर समस्या के संकेत उस समय उभरने लगे जब बैंक एक दूसरे को उधार देने से बचने लगे क्योंकि वे यह सुनिश्चित नहीं कर पा रहे थे कि धारित आस्तियों तथा दिए गए आश्वासनों का मूल्यांकन किस प्रकार किया जाए - उनके स्वयं के ग्राहकों के तथा संभावित उधारकर्ताओं के। कुछ समय के लिए केंद्रीय बैंक द्वारा दिए गए उधार से इस अंतर को पाटा जा सका। परंतु अगस्त 2007 से एक के बाद एक हुई घटनाओं के कारण वित्तीय प्रणाली पर दबाव बढ़ गया। मार्च 2008 तक बिअर स्टर्न्स को बचाना पड़ा; छह महीने बाद 15 सितंबर को लीमन ब्रदर्स दिवालिया हो गया; तथा सितंबर के

अंत तक स्वयं वैश्विक वित्तीय प्रणाली ध्वस्त होने की कगार पर आ गयी।

2.30 जहां अमरीका की वित्तीय संस्थाएं समस्या के मूल में थीं वहीं यूरोप के बैंकों ने भी बिल्कुल उसी प्रकार की समस्याओं का सामना किया जो इस बात को दर्शाता है राष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली किस सीमा तक एक दूसरे से गंभीर रूप से जुड़ गयी है। यूरोप के बैंक सबप्राइम बंधक निवेशों से हुई हानियों, लीवरेज वाले ऋणों, वित्तीय बचाव व्यवस्था की विफलता तथा पारंपरिक ऋण हानियों में लगातार हुई वृद्धि के कारण अमरीकी बैंकों की तरह ही बुरी तरह प्रभावित हुए। एक अनुमान के अनुसार अटलांटिक के दोनों ओर के बैंकों को समग्र रूप में 1 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर से भी अधिक की हानि उठानी पड़ी है तथा उन्हें 1.3 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर की और हानि उठानी पड़ सकती है (अनुबंध II.1)।

2.31 उभरते देशों ने वैश्विक वित्तीय बाजारों से निरंतर जुड़ने के बावजूद अमरीका की तरह कतिपय जटिल वित्तीय ढांचे का विकास नहीं किया है, परंतु इनमें से कतिपय देश राजकोषीय असंतुलन तथा / अथवा अत्यधिक विस्तारित बैंकिंग प्रणाली से उत्पन्न गंभीर बाह्य असंतुलों से प्रभावित हुए। ये देश वित्तीय तथा व्यापार चैनलों से संकट के फैलने के कारण विशेष रूप से जोखिम की स्थिति में आ गए (सारणी II.6)। तथापि, विभिन्न देशों के बीच संप्रेषण का विशिष्ट चैनल अलग-अलग हो सकता है। यह संभावना है कि बैंकों द्वारा अभी तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने तथा पूंजी बाजार सामान्यतः कम विकसित होने के कारण वित्तीय प्रणाली के मूल ढांचे में कोई उल्लेखनीय रूप से बदलाव नहीं आएगा।

2.32 बीआइएस के अनुसार, सितंबर 2008 के मध्य में लीमन ब्रदर्स की विफलता के संदर्भ में अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग की प्रवृत्ति की विशेषता निम्नलिखित रही है:

- बैंकों ने अन्य देशों के उभरते बाजारों को दिए जाने वाले ऋण में कमी की परंतु इन देशों में से अधिकांश देशों में उनका स्थानीय परिचालन अपेक्षाकृत रूप से सुस्थिर था। रिपोर्ट करने वाले बैंकों के सभी चारों उभरते बाजार क्षेत्रों, अर्थात् उभरते यूरोप, उभरते दक्षिण अमरीका, उभरते एशिया प्रशांत क्षेत्र तथा उभरते मध्य-पूर्व/अफ्रीका, के अन्य देशों के प्रति दावों में चौथी तिमाही

सारणी II.6: वित्तीय प्रणाली को वास्तविक अर्थव्यवस्था के साथ जोड़ना

चैनल	व्यवस्था
वित्तपोषण की लागत	उच्च ब्याज दरों, उच्चतर स्प्रेड तथा इक्विटी की कम कीमतों से निधीयन की लागत में वृद्धि होती है, निवेश में कमी आती है।
ऋण उपलब्धता	सख्त वित्तीय स्थिति से बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थाओं की उधार देने की इच्छा में कमी आती है।
जोखिम विमुखता	जोखिम विमुखता के उच्चतर स्तर से जोखिम प्रीमिया में तथा गुणवत्ता की ओर झुकाव की प्रवृत्ति में बढ़ोतरी होती है।
फर्म की निवल मालियत	इक्विटी तथा संपत्तियों की कीमतों में कमी आने से फर्म की निवल मालियत में गिरावट आती है जिससे गलत विकल्प के चुनाव तथा नैतिक जोखिम की समस्या बढ़ती है।
पारिवारिक इकाइयों की निवल मालियत	इक्विटी तथा संपत्तियों की कीमतों में कमी आने से पारिवारिक इकाइयों की निवल मालियत में गिरावट आती है तथा ऋण पात्रता में गिरावट आने से उन्हें उधार प्राप्त करना और कठिन हो जाता है।
विनिमय दरें	“सुरक्षित” मानी जाने वाली मुद्राओं की चाह तथा पूंजी के प्रवाह में विपर्यय होने से विनिमय दर प्रभावित होती है और इसका व्यापार पर प्रभाव पड़ता है।
विश्वास	ग्राहकों, व्यापारियों तथा निवेशकों के विश्वास के स्तर में गिरावट आती है जिससे उनके कार्यकलापों में कमी आती है।

स्रोत: सेचेट्टी, स्टीफन जी तथा और अन्य (2009), फिनांसियल क्राइसिस एंड इकोनॉमिक एक्टिविटी, अगस्त, बीआइएस।

में समग्र रूप में 282 बिलियन अमरीकी डॉलर (10 प्रतिशत) की कमी आयी तथा एशिया प्रशांत क्षेत्रों के प्रति दावों में सबसे अधिक गिरावट आई। गिरावट की प्रवृत्ति जनवरी-मार्च 2009 के दौरान जारी रही और उभरते बाजारों के प्रति विभिन्न देशों का समग्र दावा घटकर 134 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। बैंकों के अन्य देशों के प्रति दावों के विपरीत उनके विदेश स्थित कार्यालयों द्वारा स्थानीय निवासियों के प्रति स्थानीय मुद्रा के दावों की मात्रा समग्र रूप में सुस्थिर रही तथा कई देशों के संबंध में इसमें वस्तुतः वृद्धि हुई।

- निधीयन के दबावों के कारण तुलनपत्रों में संकुचन हुआ। सितंबर 2008 में शुरू हुए वित्तीय प्रणाली के दबावों का असर चौथी तिमाही तक बरकरार रहा जिसने बैंकों के विदेशी पोर्जिशनों में अब तक के सबसे अधिक कमी ला दी। बीआइएस की समेकित बैंकिंग सांख्यिकी (अंतिम जोखिम आधार), जो राष्ट्रीय बैंकिंग प्रणालियों के विदेशी दावों के बकाया स्टॉक को दर्शाती है, के अनुसार 2008 की चौथी तिमाही में समग्र रूप में कुल विदेशी दावों में 3.2 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर (-11 प्रतिशत) की कमी आयी और यह घटकर 25 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर रह गया। इस कमी की अंशतः व्याख्या तिमाही के दौरान कई मुद्राओं की तुलना में अमरीकी डॉलर के मूल्य में हुई उल्लेखनीय वृद्धि, जिसके कारण अमरीकी डॉलर में प्रकट करने पर गैर-अमरीकी डॉलर पोर्जिशनों के बकाया स्टॉक में कमी आती है, के रूप में

की जा सकती है। जहां अधिकांश प्रमुख बैंकिंग प्रणालियों ने कमी रिपोर्ट की वहीं यूरोप के बैंकों के पोर्जिशनों में अत्यधिक गिरावट आई।

- लीमन ब्रदर्स के दिवालिया हो जाने के कारण बैंकों के निधीयन के स्रोतों में अस्थिरता के संकेत दिखाई दिए। 2008 की चौथी तिमाही के अंत तक अंतरराष्ट्रीय अंतर बैंक दावों की राशि में रिकार्ड स्तर की गिरावट आई (953 बिलियन अमरीकी डॉलर, अंतर कार्यालय दावों को छोड़कर)। यूरो में मूल्यवर्गित दावों में सर्वाधिक गिरावट आई, जो मुख्यतः यूरो क्षेत्रों के बीच अंतर बैंक उधारी के घटे हुए स्तर को दर्शाती है। बीआइएस के समेकित बैंकिंग सांख्यिकी के अनुसार बैंकिंग प्रणाली-वार यूरोप के बैंकों, मुख्यतः डच, स्विस, जर्मन तथा यूके के बैंकों, ने अंतर बैंक पोर्जिशनों में सबसे अधिक गिरावट रिपोर्ट की।

2.33 मौद्रिक तथा राजकोषीय प्रोत्साहन उपायों के अलावा कई देशों ने वित्तीय क्षेत्र से संबंधित संकट प्रबंधन नीतियों की व्यापक शृंखला को लागू किया। जो प्रमुख कार्रवाई की गई उनमें ऋणदाता सुरक्षा कार्यक्रमों की स्थापना तथा बैंकों की पूंजी में वृद्धि किया जाना शामिल हैं (परिशिष्ट सारणी II.1)। जो अतिरिक्त उपाय किए गए उनमें बैंकों के संकटग्रस्त आस्तियों की समस्या से निपटने संबंधी उपाय शामिल थे। संकट की अवधि के दौरान जो नीतिगत उपाय किए गए उनका लक्ष्य संकट की रोकथाम से लेकर बाद के पुनर्गठन तथा आस्ति प्रबंधन से संबंधित था।

2.34 सितंबर 2008 में लीमन ब्रदर्स के दिवालिया हो जाने के बाद से उत्पन्न संकट के गहराने के प्रत्युत्तर में केंद्रीय बैंकों तथा सरकारों द्वारा मुद्रा बाजारों तथा वित्तीय संस्थाओं की सहायता हेतु जो नीतिगत उपाय किए गए वे बहुस्तरीय तथा व्यापक थे। इस दौरान जो मौद्रिक नीतिगत उपाय किए गए उनमें चलनिधि को बढ़ाए जाने, नीतिगत दरों में कटौती करने तथा निजी जमाराशियों की गारंटी बढ़ाने तथा बैंक ऋणों के लिए गारंटियां देने जैसे वित्तीय सुरक्षा दायरे के ढांचे में परिवर्तन करने आदि प्रमुख हैं। जहां विभिन्न देशों के केंद्रीय बैंकों ने मौद्रिक नीति के नरम रुख को जारी रखा वहीं उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की सरकारों द्वारा किए गए वित्तीय क्षेत्र बचाव कार्यक्रमों का उद्देश्य विशिष्ट संस्थाओं के प्रति उद्दिष्ट विशेष कार्रवाई तथा प्रणालीव्यापी कार्यक्रमों के जरिए बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं को समर्थन देना था। संकट के दौरान वित्तीय संस्थाओं के लिए निधियों के पारंपरिक स्रोतों के सूख जाने के कारण सरकार की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई। इस दौरान जो उपाय किए गए उनमें : (i) बैंकों के पूंजी आधार को सुदृढ़ करने के लिए पूंजी को बढ़ाया जाना; (ii) बैंकों को थोक आधार पर निधीयन प्राप्त करने हेतु सहायता के लिए देयताओं पर स्पष्ट गारंटी दिया जाना; तथा (iii) बैंकों को बड़ी हानियों से बचाने के लिए उनके संकटग्रस्त पारंपरिक आस्तियों की खरीद अथवा उनके संबंध में गारंटी देना शामिल थे। किए गए उपायों में वाणिज्यिक पत्र अथवा बंधक बांडों की खरीद के लिए निधि की स्थापना तथा सॉर्ट-सेलिंग को बंद करने अथवा उन पर प्रतिबंध लगाने जैसे उपाय शामिल थे। इस तरह के हस्तक्षेप का लक्ष्य वित्तीय मध्यस्थ संस्थाओं को व्यापक स्तर पर दिवालिया हो जाने से बचाना तथा वित्तीय मध्यस्थन के कार्यों को सामान्य बनाने में मदद करना था (बॉक्स II.2)।

4. वैश्विक बैंकिंग प्रणाली का परिदृश्य

2.35 वित्तीय संकट के परिणामस्वरूप बैंकिंग क्षेत्र परिवर्तन के महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। यह अपेक्षा है कि वे कम 'फैशनेबल' हों, यहा तक कि वे राज्य की अधिक भागीदारी, बेहतर निवेशक जांच तथा पूंजी के पर्याप्त उच्च स्तर के साथ अत्यधिक विनियमित उद्योग हों। इसके कारण पिछले कुछ दशकों की अवधि की तुलना में बैंकों की वृद्धि दर, लाभ की मात्रा तथा उतार-चढ़ाव में कमी आ सकती है - एक ऐसी प्रवृत्ति जिसे वृद्धि के प्रमुख प्रेरकों के अभाव की संभावना को देखते हुए मध्यावधि में तीव्र किया जा सकता है।

विश्लेषण के अनुसार, वित्तीय संकट के बाद बैंकिंग का परिदृश्य अनिश्चित रहने का अनुमान है। अल्पावधि में परिदृश्य गंभीर प्रतीत होता है जबकि दीर्घावधि की संभावनाओं के प्रेरक तत्व बहाली के प्रारंभिक लक्षणों की ओर संकेत करते हैं (बॉक्स II.3)। विशेष रूप से ऋण में वृद्धि की दर कम होने, ऋण हानियों के अधिक होने तथा पूंजी बाजार कार्यकलापों से आय की मात्रा कम होने के कारण अमरीका के बैंकों के लिए ये वर्ष कम लाभप्रदता वाले वर्ष होंगे। दूसरी बात यह कि जहां बैंकिंग में समेकन की प्रक्रिया जारी रह सकती है वहीं वित्तीय वैश्वीकरण तथा बाजार समेकन की अपेक्षा घरेलू बाजारों की ओर ध्यान दिया जा सकता है। तीसरी बात, एक सामान्य प्रभाव यह हो सकता है कि बैंकों के प्रति विश्वास में भारी गिरावट आए तथा उनकी सम्मान को ठेस पहुंचे। बैंकिंग सेवाओं की मांग अपेक्षाकृत कम लचीली होने के कारण अल्पावधि में इसका प्रतिकूल असर न पड़ने पर भी दीर्घावधि में बैंकों पर इसका प्रतिकूल असर पड़ेगा। अतः, व्यापक स्तर पर परिवर्तित कारोबारी परिवेश में सामंजस्य स्थापित करने के अलावा बैंकों के लिए यह एक बड़ी चुनौती होगी कि किस प्रकार सार्वजनिक प्रतिष्ठा में यथाशीघ्र सुधार किया जाए तथा ग्राहकों, नीति-निर्माताओं तथा जनसाधारण के विश्वास को पुनः प्राप्त किया जाए।

5. वैश्विक संदर्भ में भारतीय बैंकिंग

2.36 भारतीय बैंकिंग की गतिविधियों का विश्लेषण वैश्विक गतिविधियों तथा संप्रेषण के विविध चैनलों को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। सारणी II.7 में विभिन्न देशों के संदर्भ में भारतीय बैंकिंग की प्रवृत्ति दर्शाया गया है। विभिन्न देशों की स्थिति के परिप्रेक्ष्य में, यद्यपि भारतीय बैंकिंग ने स्वस्थ प्रवृत्ति को दर्शाया है तथापि उल्लेखनीय पक्ष यह है कि भारत में अब तक बैंकिंग संकट की घटना नहीं हुई है। वैश्विक संकट से भारत के अछूता रहने के कतिपय कारण इस प्रकार हैं: (1) क्रेडिट डेरिवेटिव बाजार के विकास का आरंभिक स्तर; (2) प्रतिभूतिकरण संबंधी विनियामक दिशा-निर्देश लाभ को तत्काल आधार पर हिसाब में लेने की अनुमति नहीं देता; (3) उन विवेकपूर्ण नीतियों का दृढ़ता से पालन करना जो संस्थाओं को अत्यधिक जोखिम उठाने तथा वित्तीय बाजारों में अत्यधिक उतार-चढ़ाव तथा उथल-पुथल वाली स्थिति के आने से रोकती है; तथा (4) बैंकों के पर्यवेक्षणों तथा विनियमन के बीच स्थित आपसी समन्वय।

बॉक्स II.2: वित्तीय क्षेत्र बचाव कार्यक्रम - एक मूल्यांकन

वैश्विक वित्तीय संकट के परिणामस्वरूप बैंकिंग प्रणाली को समर्थन देने के लिए की गई कार्रवाइयों का स्तर अभूतपूर्व था। बीआइएस के अनुमान के अनुसार ग्यारह देशों (नामतः, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, नीदरलैंड, स्पेन, स्विटजरलैंड, यूनाइटेड किंगडम तथा अमरीका) द्वारा विभिन्न पैकेजों के लिए वचन दी गई संसाधन राशि की कुल मात्रा 5 ट्रिलियन यूरो अथवा जीडीपी का 18.8 प्रतिशत थी; परिव्यय की राशि 2 ट्रिलियन यूरो अथवा जीडीपी का 7.6 प्रतिशत थी।

विभिन्न देशों के बीच हस्तक्षेप की राशि की मात्रा भिन्न-भिन्न रही है: यूनाइटेड किंगडम तथा नीदरलैंड जैसे देशों में यह राशि अधिक थी जहां परिव्यय की राशि उनकी जीडीपी का क्रमशः 44.1 प्रतिशत तथा 16.6 प्रतिशत तक पहुंच गई थी। इन देशों की बैंकिंग प्रणाली का आकार वास्तविक अर्थव्यवस्था की तुलना में बड़ा है तथा इसमें बड़ी संस्थाओं का प्राधान्य है और ये संस्थाएं संकट के कारण बुरी तरह प्रभावित हुईं। जापान (जीडीपी का 0.1 प्रतिशत) तथा इटली (0.6 प्रतिशत) जैसे उन देशों में हस्तक्षेप की राशि कम थी जहां बैंकों का फोकस पारंपरिक ऋण संबंधी कार्यकलापों पर था और ये हाल तक संकट से कम प्रभावित हुए। पूंजी की कमी तथा निधियन संबंधी समस्या के समाधान हेतु की गई कार्रवाई व्यापक थी तथा इसने सामान्यतः प्रणालीव्यापी कार्यक्रम का स्वरूप ले लिया। बैंक की आस्तियों की गुणवत्ता में सुधार करने संबंधी उपाय आम नहीं थे तथा ये मुख्यतः चुनिंदा बड़ी संस्थाओं पर केंद्रित थे। तथापि, हाल ही में किए गए कतिपय उपायों में अंतरल अथवा “अशोध्य” आस्तियों की समस्या से निपटने के लिए तैयार की गई व्यापक योजनाएं शामिल हैं। पुनः पूंजीकरण तथा ऋण गारंटी कार्यक्रमों में भाग लेने वाले बैंकों के बीच, जिन मध्यस्थ संस्थाओं ने शेयरधारकों की इक्विटी की तुलना में अधिक पूंजी प्राप्त की उन्होंने गारंटी के अंतर्गत अधिक देयताएं (कुल देयताओं की तुलना में) भी जारी कीं। इसके अतिरिक्त, पूंजी डालने के पूर्व के दृष्टांत के बाद आस्तियों की खरीद की गई/ गारंटी दी गई और यह बात इस ओर संकेत करती है कि संकटग्रस्त संस्थाओं में विश्वास की पूर्णतः बहाली हेतु सरकारी समर्थन के पहले चरण के विफल हो जाने के बाद इस विकल्प का उपयोग किया गया। पात्र संस्था-वार औसत उद्ग्रहण(अपटेक) अनुपात (अर्थात् सकल प्रतिपद्धताओं की तुलना में कार्यक्रम विशेष के अंतर्गत परिव्यय का अनुपात) ऋण गारंटियों (20 प्रतिशत से कम) की तुलना में पूंजी के अंतर्वेशन(लगभग 50 प्रतिशत) के लिए अधिक था। पूंजी अंतर्वेशन तथा ऋण गारंटी दोनों के लिए यूनाइटेड किंगडम की सहभागिता दर सर्वाधिक थी जो शायद प्रमुख बैंकों की संख्या तुलनात्मक रूप

से कम होने तथा सरकारी कार्यक्रमों को जरूरतों के मुताबिक ढाले जाने की ओर संकेत करती है।

विश्व के विभिन्न देशों की सरकारों को वित्तीय प्रणाली के व्यापक विघटन को रोकने के लिए हस्तक्षेप करना पड़ा। उन्होंने शीर्ष के 20 बैंकों के लिए ही 200 बिलियन अमरीकी डॉलर से भी अधिक राशि नई पूंजी के रूप में उपलब्ध कराई, इसके अतिरिक्त काफी बड़ी राशि की आस्तियां भी उपलब्ध कराईं एवं ऋण गारंटियां दीं। यह स्पष्ट है कि उन्नत देशों का बैंकिंग क्षेत्र अब काफी हद तक बड़े स्तर के सरकारी समर्थन पर निर्भरशील है। यदि वैश्विक बैंकिंग उद्योग के मूल्य में होने वाली तात्कालिक हानि की मात्रा बड़ी हो तो जीडीपी में हानि की दृष्टि से आगे आने वाली चुनौतियों का स्तर और भी बड़ा होगा। वित्तीय क्षेत्र बचाव उपायों के प्रभावों का सार निम्नानुसार प्रस्तुत किया जा सकता है:

- सरकार द्वारा किए गए हस्तक्षेप बैंकों की चूक जोखिम को कम करने में, विशेष रूप से अल्पावधि में, प्रभावी हुए हैं। औसत आधार पर, प्रणालीव्यापी बचाव पैकेजों की घोषणा के बाद सीडीएस प्रीमिया में कमी आयी, विशेष रूप से पूंजी अंतर्वेशन की घोषणा के लिए।
- सीडीएस स्प्रेड की दृष्टि से देशों के बीच सकारात्मक सह-संबंध है क्योंकि अन्य देशों द्वारा घोषणा के बाद उनमें “शीघ्र गिरावट” के लक्षण दिखे।

इन घटनाक्रमों से महत्वपूर्ण धारणाएं उभर रही हैं। प्रथमतः, सरकारी हस्तक्षेप, कम-से-कम अब तक, बैंकों के लिए “सकारात्मक चक्र” की शुरुआत हेतु पर्याप्त नहीं रहा है ताकि यह देखा जा सके कि पूंजी तथा उधारी में सुदृढ़ वृद्धि के साथ-साथ उधार देने तथा लाभ में भी वृद्धि हो। उदाहरणस्वरूप, 2009 की पहली और दूसरी तिमाही के बीच बैंक द्वारा उपलब्ध करायी गयी निधियन की राशि के हिस्से अथवा सरकार द्वारा दी गई गारंटी में तेजी से कमी आयी। द्वितीयतः, बचाव उपाय वित्तीय प्रणाली में स्थिरता लाने हेतु प्रभावी रहे हैं, परंतु विकृति तथा दक्षता में कमी के रूप में इनकी कीमत चुकानी पड़ी है। यह स्थिरता एवं वित्तीय प्रणाली की दक्षता के बीच चुनाव करते समय विचार किए जाने वाले मुद्दे का उदाहरण है।

संदर्भ:

अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक (2009), वित्तीय क्षेत्र बचाव कार्यक्रमों का एक आकलन, बीआइएस पेपर 48, जुलाई।

2.37 वैश्विक तथा भारतीय बैंकिंग के बीच अन्य उल्लेखनीय अंतरों को भी ध्यान में लिया जाना चाहिए। एक उल्लेखनीय पक्ष यह है कि अन्य देशों में जहां प्रतिकूल घटनाओं का चक्र वित्तीय क्षेत्र से वास्तविक क्षेत्र की ओर बढ़ा वहीं इसके विपरीत भारत में बैंकिंग क्षेत्र वास्तविक क्षेत्र से प्रभावित हुआ। दूसरा, वित्तीय क्षेत्र सुधारों को वैश्विक अर्थव्यवस्था से जोड़ने की गति के साथ तालमेल बिठाने के लिए अब तक जो प्रयास किए गए उनसे काफी लाभ हुआ। सुधार की गति तथा उसके कार्यान्वयन के समय के चुनाव संबंधी निर्णय

लेते समय जिस बात पर विचार किया गया वे वित्तीय बाजारों में उतार-चढ़ावों के प्रबंधन तथा मौद्रिक परिचालनों के संचालन के असर से संबंधित थे। विभिन्न मोर्चों पर क्रमबद्ध तथा समन्वित रूप से लागू करने हेतु बल देते हुए वित्तीय क्षेत्र सुधार के संबंध में जो सोचा-समझा दृष्टिकोण अपनाया गया उसने भारत के हितों की भली-भांति रक्षा की। प्रचलित अभिशासन संबंधी मानकों, जोखिम प्रबंधन प्रणालियों तथा देश में वित्तीय प्रणालियों के प्रोत्साहन ढांचे को ध्यान में रखने के साथ-साथ स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त

बॉक्स II.3: वित्तीय संकट के बाद वैश्विक बैंकिंग परिदृश्य - ड्यूश बुंड्सबैंक रिसर्च का दृष्टिकोण

वैश्विक वित्तीय संकट के कारण अमरीका तथा यूरोप के बैंकों के परिचालनात्मक ढांचे में उल्लेखनीय बदलाव आने से अल्पावधि में संभावनाएं गंभीर बनी रह सकती हैं। उद्योग का पुनःविनियमन मौलिक रूप से किए जाने, स्वामित्व का ढांचा बड़ी राशि की सरकारी सहायता के कारण सरकारी क्षेत्र की ओर झुक जाने तथा निवेशकों की कड़ी जांच की जरूरत महसूस होने के कारण समग्र बैंकिंग क्षेत्र की वृद्धि तथा लाभप्रदता में कमी आने की संभावना है। इक्विटी अनुपात उल्लेखनीय रूप से अधिक रहेगा।

प्रमुख प्रेरक तत्वों की कमी : पिछले 15 वर्षों के दौरान अमरीका के बैंकों के कार्यनिष्पादन में जो सुधार हुआ वह मुख्यतः उधारी में सुदृढ़ वृद्धि तथा निम्नतर ऋण हानियों के कारण था। निजी घरेलू इकाइयों द्वारा अपने ऋण को कम करने के कारण यूरोपीय देशों तथा विशेष रूप से अमरीका में आय की वृद्धि की दर में कमी आने की संभावना है। कारोबारी आय तथा प्रतिभूतिकरण जैसे आधुनिक पूंजी बाजार कार्यकलापों के महत्व में कमी आने के साथ-साथ ऋण प्रदान की वृद्धि दर में गिरावट आने तथा ऋण से होने वाली हानियां अधिक होने के कारण बैंकों के लिए वृद्धि के प्रमुख कारक तत्वों में कमी आ सकती है।

समेकन जारी रह सकता है परंतु भिन्न फोकस के साथ: डीलियों की संख्या काफी होने पर भी लेनदेनों की मात्रा में कमी आने की संभावना है तथा रणनीति आधारित विलयन तथा अधिग्रहण की अपेक्षा पुनःसंरचना का प्राधान्य हो सकता है। घरेलू डीलियों की संभाव्यता में वृद्धि हुई है जबकि अंतर-देशीय विलयनों की संख्या में कमी आयी है।

यूरोप के बैंकों के अंतरराष्ट्रीयकरण की प्रक्रिया धीमी होने की संभावना: भावी संभावनाएं, विशेष रूप से विदेशी बाजारों की अनिश्चितता संबंधी संभावनाएं तथा पूर्णतः राष्ट्रीय बैंकिंग क्षेत्र स्थिरीकरण हेतु तैयार किए गए कार्यक्रम आदि ऐसे कारक हैं जो घरेलू बाजारों के पुनर्गठन की ओर प्रेरित करते हैं। यह बात उन यूरोपीय बैंकों के लिए अधिक प्रासंगिक है जिन्होंने यूरोप के अन्य देशों में हाल ही में काफी हद तक विस्तार कर लिया है जबकि अमरीका के बैंक विदेश की ओर रुख करने की अपेक्षा अपने राष्ट्रीय बाजार को अपना लक्ष्य बना सकते हैं।

आय तथा लाभ संबंधी गतिविधियों के संबंध में दीर्घावधि परिदृश्य निम्नानुसार है:

- कारोबारी आय में हुई तेजी का दौर, जिसने हाल के व्यापार चक्र के चढ़ाव वाले दौर में निवल आय की वृद्धि में मदद की थी, समाप्त हो गया जिसके कारण बैंकों ने स्वामित्व वाले कारोबार के लिए निर्धारित संसाधनों में कमी की। हालांकि कारोबारी आय में स्वामित्व वाले कारोबार की अतिरिक्त बचाव व्यवस्था (हेज) संबंधी लाभ-हानि आदि भी शामिल होती है, परंतु इसके बावजूद बाजारों के सामान्य स्थिति में आ जाने पर भी यह समग्र आय में कारोबारी आय से होने वाले बड़े स्तर के योगदान की संभावना को सीमित कर देती है। इसके अतिरिक्त, स्वामित्व के ढांचे में मौलिक बदलाव - सार्वजनिक शेरधारकों के काफी अधिक प्रभाव- के कारण पूंजी बाजार कार्यकलापों में अधिक जोखिम उठाने के प्रति बैंकों की रुचि में कमी आएगी।
- वित्तीय स्थिरता के प्रति जोखिम को देखते हुए वित्तीय संस्थाओं द्वारा विशेष रूप से ट्रेडिंग के खंड में जोखिम एक्सपोजर को कम करने हेतु बल दिया जा रहा है। प्रबंधन के अधीन स्थित आस्तियों की मात्रा के कम होने, लेनदेनों की संख्या में कमी आने तथा ग्राहकों द्वारा अत्यधिक मांग किए जाने वाले उत्पादों पर मार्जिन कम होने के कारण शुल्क तथा कमीशन में कमी आने की संभावना है। बैंकों के प्रति ग्राहकों के विश्वास में कमी आई है जिसने ग्राहकों को अत्यधिक चलनिधि युक्त तथा सुरक्षित आस्ति की श्रेणियों एवं सरल, मानकीकृत तथा “पण्य” के स्तर की आस्तियों की ओर रुख करने के लिए प्रेरित किया है और तीव्र प्रतिस्पर्धात्मक दबाव का सामना करने के कारण उनकी मार्जिन में कमी आ गई है। इसके अलावा, भविष्य में आर्थिक वृद्धि की दर कम होने की संभावना को देखते हुए भुगतान सेवाओं जैसे ऋण से असंबद्ध कारोबारी क्षेत्रों, जिनके कारोबार की मात्रा जीडीपी में वृद्धि की दर से काफी हद तक जुड़ी हुई है, से होने वाली आय की वृद्धि दर में कमी आ सकती है।

- **यूरोपीय तथा अमरीकी बैंकों के बीच उल्लेखनीय अंतर:** चूंकि यूरोप के अधिकांश बैंक सेवाओं की व्यापक शृंखला प्रदान करने वाले यूनिवर्सल बैंकों के रूप में कार्य करते हैं, अतः उनकी गैर ब्याज आय का एक उल्लेखनीय हिस्सा लेनदेनों तथा आस्ति प्रबंधन सेवाओं से मिलने वाले शुल्क तथा कमीशन से प्राप्त होता है। दूसरी ओर अमरीका में बैंक, ब्रोकर तथा आस्ति प्रबंधन फर्म अलग-अलग संस्थाएं होती हैं। अतः कुछ अमरीकी बैंकों द्वारा आय के सुस्थिर स्रोत के रूप में आस्ति प्रबंधन के कारोबार को अपनाए जाने के बावजूद इन बैंकों की आय में आस्ति प्रबंधन शुल्क तथा ब्रोकरेज कमीशन से प्राप्त होने वाली आय का हिस्सा कम होता है। साथ ही, चूंकि अमरीका में अधिकांश बैंकों का फोकस पूर्णतः खुदरा बैंकिंग गतिविधियों की ओर होता है, अतः वहां अन्य शुल्क जैसे कार्ड एटीएम, चेक तथा बैंक ओवरड्राफ्ट एवं सर्विसिंग सेवाओं के उपयोग संबंधी शुल्क की भूमिका अधिक होती है।
- **अगले कुछ वर्षों के दौरान आय में प्रत्याशित वृद्धि हेतु निहितार्थ:** जहां यूरोप के बैंक पूंजी बाजार में पारंपरिक के रूप से कम समर्थनकारी स्थितियों - कम मूल्यन के कारण प्रबंधन के अधीन स्थित आस्तियों पर प्रतिकूल असर पड़ने तथा ग्राहकों द्वारा ट्रेडिंग अथवा निवेश करने से विरत रहने- का सामना करते रहे हैं वहीं यूएस के बैंकों की शुल्क तथा कमीशन से होने वाली आय की राशि गिरावट के दौर में भी सुदृढ़ रही है। मुद्रास्फूर्ति के कम दबाव के चलते ढांचागत रूप से ब्याज दरें कम होने से अंततः ब्याज से प्राप्त निवल आय में वृद्धि हुई है। घटती ब्याज दरें बैंकों के लिए लाभदायक होती हैं क्योंकि संबंधित बाजार खंडों में प्रतिस्पर्धा के स्तर में भिन्नता के कारण ब्याज दर में परिवर्तन का अंतरण (पास-थ्रू) तुलनपत्र के आस्ति तथा देयता पक्ष में भिन्न-भिन्न रूप में पड़ता है।
- **आने वाले वर्षों में एक ढांचागत परिवर्तन आ सकता है, परंतु यह बहस का मुद्दा है:** बैंकों की ब्याज आय को सुदृढ़ करने में मदद करने वाले एक अन्य कारक अर्थात् ब्याज दर में दीर्घावधि गिरावट से मिलने वाला लाभ भी ब्याज दरों के पहले ही निचले स्तर तक पहुंच जाने के कारण समाप्त हो गया है। विश्व के देशों की सरकारें बैंकिंग प्रणाली में स्थिरता लाने तथा मंदी के असर को कम करने के लिए बड़े स्तर के राजकोषीय घाटे का सहारा ले रही हैं। चूंकि अधिकांश विकसित देश अति अनुकूल समय में भी संतुलित बजट का स्तर प्राप्त नहीं कर पाए हैं, अतः आने वाले वर्षों में ढांचागत सुधार की दिशा में हुई देरी का प्रतिकूल असर पड़ेगा। उदाहरणस्वरूप, आइएमएफ का पूर्वानुमान है कि अमरीका का जीडीपी की तुलना में सरकारी ऋण अनुपात 2007 के 63 प्रतिशत से बढ़कर 2010 में 90 प्रतिशत हो जाएगा, यूके में 44 प्रतिशत से बढ़कर 69 प्रतिशत तथा जर्मनी में 65 प्रतिशत से बढ़कर 80 प्रतिशत हो जाएगा। सरकारी बांडों विशेष रूप से अल्प अवधि की परिपक्वता वाले बांडों के निर्गम की गति में 2008 की शरत् से तेजी आ चुकी है। वित्तीय संस्थाओं द्वारा सरकारी गारंटीवाले अतिरिक्त बांड जारी किए जा रहे हैं। सरकारी ऋण की मात्रा में वृद्धि होना एक ऐसा कारक है जिसके कारण बाजार की स्थितियां सामान्य होते ही ब्याज दर में वृद्धि होने की संभावना रहती है।
- **ऋण हानियां कम होने की संभावना:** बैंकों के लाभ की मात्रा को एक नए उच्चतर स्तर तक ले जाने वाले एक अन्य कारक अर्थात् ऋण हानियों की कम मात्रा में पहले ही बदलाव आ चुका है और यह बैंकों की लाभप्रदता के लिए एक प्रमुख बोझ बन गया है। यदि वर्तमान संकट के दौरान यूरोप में अशोध्य ऋण प्रभार की मात्रा 1990 के दशक के प्रारंभिक वर्षों के स्तर से बढ़कर सकल ऋण के 2 प्रतिशत से अधिक हो जाती है तो, जिसकी संभावना भी है, इससे वस्तुतः एक वर्ष की निवल ब्याज आय की राशि पूरी तरह समाप्त हो जाएगी।

संदर्भ:

ड्यूश बैंक रिसर्च (2009), ग्लोबल बैंकिंग ट्रेन्ड्स आफ्टर दि क्राइसिस, जून WWW.dbresearch.com.

सारणी II.7: विभिन्न देशों के चुनिंदा बैंकिंग संकेतक - एक तुलना

(प्रतिशत)

देश	जोखिम भारित आस्तियों (सीआरएआर) के प्रति विनियामक पूंजी				कुल ऋण के प्रति गैर निष्पादक ऋण				गैर निष्पादक ऋण के प्रति प्रावधान				आस्तियों पर प्रतिलाभ (आरओए)			
	2002	2006	2007	2008	2002	2006	2007	2008	2002	2006	2007	2008	2002	2006	2007	2008
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17
विकासशील अर्थव्यवस्थाएं																
अर्जेन्टीना	-	-	16.9	16.8	18.1	3.4	2.7	2.5	73.8	130.2	129.6	130.9	-8.9	2	1.5	1.6
ब्राजील	16.6	18.9	18.7	16.6	4.5	4.1	3.0	2.9	155.9	152.8	181.8	170.9	2.1	2.5	2.9	2.0
चीन	-	-	8.4	8.2	26.0	7.5	6.7	2.5	-	-	39.2	115.3	-	0.9	1.0	-
भारत	12.0	12.4	12.3	13	10.4	3.5	2.5	2.3	-	58.9	56.1	52.6	0.8	0.9	0.9	1.0
इंडोनेशिया	20.1	21.3	19.3	16.8	24.0	13.1	4.1	3.5	130	99.7	87.7	98.5	1.4	2.6	2.8	2.6
कोरिया	11.2	12.8	12.3	10.9	2.4	0.8	0.7	1.1	89.6	175.2	199.1	155.4	0.6	1.1	1.1	-
मलेशिया	13.2	13.5	13.2	12.6	15.9	8.5	6.5	5.1	38.1	50.7	77.3	86.9	1.3	1.3	1.5	1.6
मेक्सिको	15.7	16.3	15.9	15.3	3.7	2.1	2.7	2.5	138.1	207.4	169.2	184	0.7	3.1	2.7	1.8
फिलीपींस	16.9	-	15.7	15.5	26.5	18.6	5.8	5.2	30.1	37.4	81.5	84.1	0.8	1.3	1.3	1.1
रूस	19.1	14.9	15.5	14.5	5.6	2.6	2.5	2.5	112.5	159.3	144.0	140.0	2.6	3.2	3.0	1.6
दक्षिण अफ्रीका	12.6	12.3	12.8	12.5	2.8	1.2	1.4	2.6	46.0	-	-	-	0.4	1.4	1.4	1.8
थाईलैंड	13.0	13.8	14.8	15.3	15.7	7.5	7.9	6.5	62.9	79.4	86.5	-	-	2.3	0.1	-
तुर्की	24.4	21.1	19.0	17.7	12.7	3.2	3.5	3.3	64.2	90.8	88.4	81.6	1.2	2.4	2.8	2.2
विकसित अर्थव्यवस्थाएं																
ऑस्ट्रेलिया	9.6	10.4	10.2	10.9	0.4	0.2	0.2	0.5	106.2	204.5	183.7	87.2	1.4	-	1.0	0.9
कनाडा	12.4	12.5	12.1	12.7	1.6	0.4	0.7	1.1	41.1	55.3	42.1	34.7	0.4	1.0	0.9	1.3
फ्रांस	11.5	-	10.1	-	4.2	3.2	2.7	-	58.4	58.7	61.4	-	0.5	-	0.4	-
जर्मनी	12.7	-	12.9	-	5.0	4.0	2.7	-	-	-	77.3	-	0.1	0.5	0.2	-
इटली	11.2	10.7	10.4	-	6.5	5.3	4.6	-	-	46	49.5	-	0.5	0.8	0.8	-
जापान	9.4	13.1	12.9	12.3	7.4	2.5	1.5	1.5	-	30.3	26.4	24.9	-0.7	0.4	0.2	0.3
यूनाइटेड किंगडम	13.1	12.9	12.6	-	2.6	0.9	0.9	-	75.0	-	-	-	0.4	0.5	0.4	-
संयुक्त राज्य अमरीका	13.0	13.0	12.8	12.5	1.4	0.8	1.4	2.3	123.7	137.2	93.1	84.7	1.3	1.3	0.8	0.3

स्रोत: वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट, अप्रैल 2009, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष।

रक्षोपाय सुनिश्चित किए गए हैं। समग्र रूप में, सावधानीपूर्वक तैयार की गयी इन प्रगतिशील नीतियों ने समष्टि आर्थिक तथा वित्तीय स्थिरता के परिवेश के साथ-साथ वित्तीय प्रणाली की दक्षता को बढ़ाने में योगदान दिया है। नीतिगत चुनौती यह है कि किस प्रकार मूल्य स्थिरता सहित उच्च वृद्धि के लक्ष्य को प्राप्त करने के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय वित्तीय उथल-पुथल की अवधि के दौरान भारत में वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित की जा सके।

2.38 सरकार तथा केंद्रीय बैंकों ने वित्तीय क्षेत्रों को प्रत्यक्ष समर्थन देना जारी रखा। तथापि, जहां समर्थनकारी उपाय काफी बड़े स्तर के थे वहीं सरकारी वित्तपोषण जरूरतों का तात्कालिक प्रभाव गारंटियों के रूप में सीमित था जिसके लिए सरकारी

वित्तपोषण अग्रिम में करने की जरूरत नहीं होती तथा अन्य समर्थन प्रदान करनेवाली संस्थाएं सामान्यतः सरकारी क्षेत्र से इतर संस्थाएं होती हैं। वित्तीय समर्थन कार्यकलापों से संबंधित सरकार द्वारा अग्रिम में की जाने वाली वित्तपोषण की राशि की आवश्यकता उन्नत जी-20 देशों के लिए जीडीपी का 5.5 प्रतिशत तथा उभरते जी-20 देशों के लिए जीडीपी का 0.4 प्रतिशत आंकी गयी है (सारणी II.8)। अब तक सरकारों द्वारा दिए गए वित्तीय क्षेत्र समर्थन सामान्यतः पहले घोषित समर्थन से उल्लेखनीय रूप से कम था। इस परिणाम के पीछे कई कारक दिखाई देते हैं जिनमें ये शामिल हैं : प्रारंभिक घोषणाओं की रक्षोपायी प्रकृति, बढ़ती स्थिरता के लक्षण तथा बैंक चलनिधि की बेहतर स्थिति, पुनः पूंजीकरण के कार्यक्रम के कार्यान्वयन में लगने वाला समय-अंतराल

सारणी II.8: वित्तीय और अन्य क्षेत्रों को सहायता

(जून, 2009 की स्थिति; अन्यथा उल्लेख न किए जाने पर 2008 की जीडीपी के प्रतिशत के रूप में)

1	2	3	4	5	6
पूंजी अंतर्वेशन	ट्रेजरी द्वारा आस्तियों की खरीद और ऋण प्रदान	गारंटी	केंद्रीय बैंक द्वारा चलनिधि प्रावधान और अन्य समर्थन	सरकार द्वारा अग्रिम वित्तपोषण	
जी-20 का औसत	2.2	3.5	8.8	9.3	3.6
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं	3.4	5.3	14.0	6.9	5.5
बिलियन अमरीकी डॉलर में	1,149	1,937	4,646	2,514	1,849
उभरती अर्थव्यवस्थाएं	0.2	0.3	0.1	13.6	0.4
बिलियन अमरीकी डॉलर में	22	38	7	1,605	47

स्रोत: होर्टन, मार्क, कुमार, मनमोहन और मौरो पाओलो (2009), दि स्टेट ऑफ पब्लिक फिनान्सेस: ए क्रॉस कंट्री फिस्कल मॉनिटर। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष स्टाफ पोजिशन नोट, एसपीएन/09/21।

तथा आस्तियों की खरीद। केंद्रीय बैंक द्वारा दी गई ऋण सुविधाओं का उपयोग कई देशों में सीमित स्तर तक किया गया प्रतीत होता है, क्योंकि स्थितियां उतनी गंभीर नहीं थी जितना उनकी घोषणाओं के समय अनुमान लगाया था।

6. निष्कर्ष

2.39 महत्वपूर्ण वित्तीय क्षेत्र बचाव कार्यक्रम तुलनात्मक रूप से सफल रहने के बावजूद इसका विखंडनकारी प्रभाव भी पड़ा तथा

प्रमुख ढांचागत वृद्धि के प्रेरक तत्वों के अभाव में भावी वैश्विक बैंकिंग परिदृश्य जटिल दिखाई देता है। वित्तीय क्षेत्र समस्या का हिस्सा न होते हुए भी भारत बाह्य आघातों तथा वित्तीय, वास्तविक तथा विश्वास चैनलों के माध्यम से उत्पन्न घरेलू संवेदनशीलताओं के प्रतिपुष्टि चक्र के जरिए प्रभावित हुआ। तथापि, भारतीय बैंकिंग पर संकट का असर प्रखर नहीं था तथा यदि भारतीय बैंकिंग अपने अंदर के ढांचागत प्रेरक तत्वों का लाभ उठा सके तो उसके सम्मुख तुलनामूलक रूप से बेहतर परिदृश्य हो सकता है।